चन्दामामा
दिसम्बर १९६१
50 nP

एक क्रिकेटियर की शान...
साठे बिस्कुट
साठे बिस्कुट एण्ड चॉकलेट कं. लि., पूना-२

दिसम्बर १९६१

★

विषय - सूची

★

एक प्रति ५० नये पैसे

वार्षिक चन्दा रु. ६—००

सुगंध
फैलता है
रेमी
स्नो और
पाउडर
Remy
Remy
Aykan
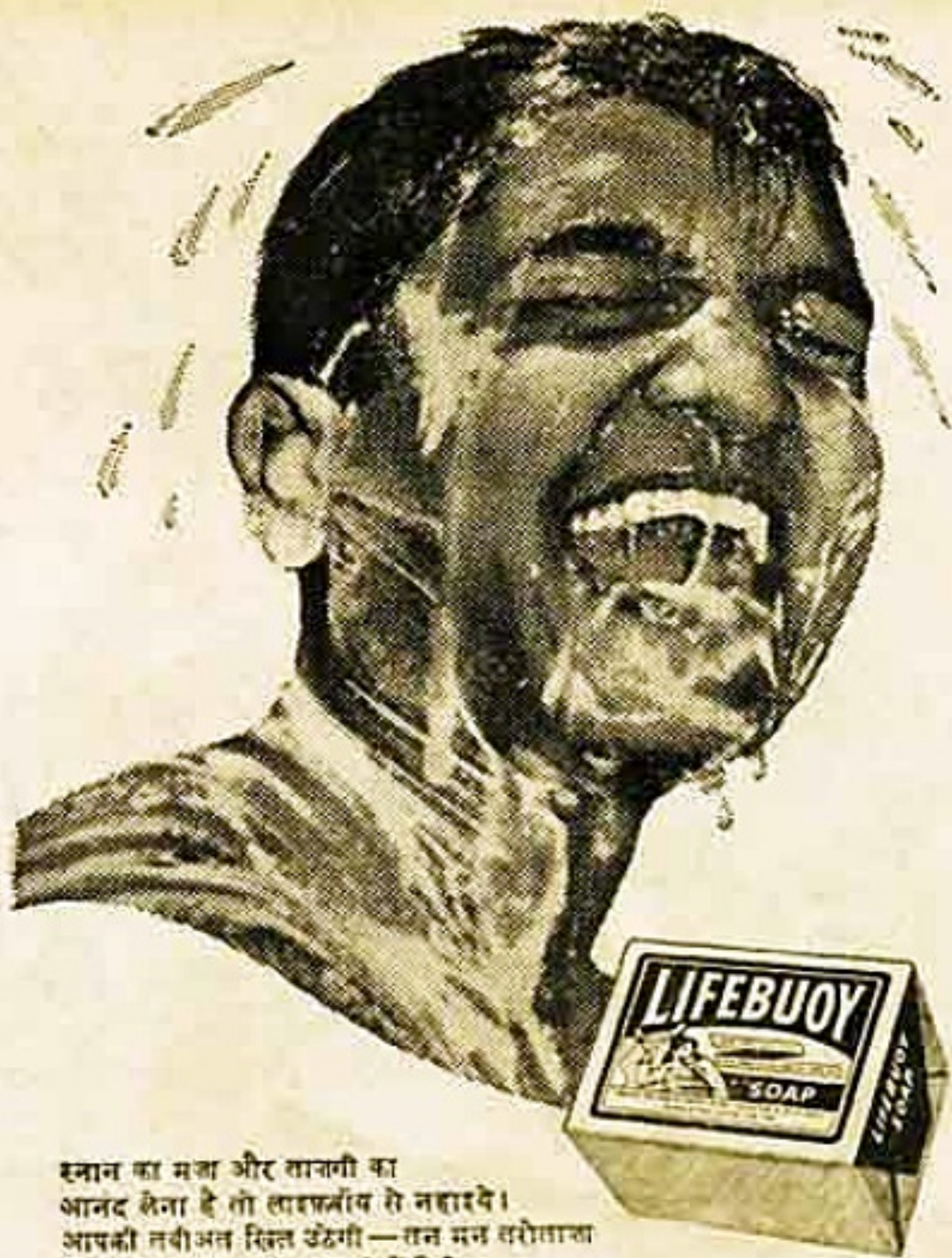
LIFEBUOY
SOAP
स्नान का मज़ा और ताजगी का
आनंद लेना है तो लाइफबॉय से नहाइये।
आपकी तबीयत खिल उठेगी — तन मन तरोताज़ा
हो जायेगा! लाइफबॉय गंदगी में छिपे
कीटाणुओं को भी बहाता है — और आप के सारे
परिवार को तंदुरुस्त रखता है!
लाइफ़बॉय है जहाँ,
तंदुरुस्ती है वहाँ!
हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन
L. 26-X29 HI

दिसम्बर १९६१

चन्दामामा मैं विगत ३ वर्षों से पढ़ता आ रहा हूं । मेरे विचार से चन्दामामा ही एक ऐसी पत्रिका है जो हमारी सारी मांगों की पूर्ति करती है । हर बार धारावाहिक उपन्यास, बेताल कथायें, प्रश्नोत्तर, चित्रकथा, पाठकों के मत जैसे स्थायी स्तम्भ हमें पूर्ण रूप से आनन्द पहुंचाते हैं । चन्दामामा विदेशों से मंगाये गये बढ़िया कागज़ों पर छपती है जिससे हम उसे काफी दिन रखते हैं और वह खराब नहीं होती है ।

राजकुमार धानुका, कलकत्ता-७

"चरित्र के विकास और उन्नति में पत्रिकाओं का काफी सहयोग होता है।" इसी कथन को ध्यान में रखकर पत्रिकाओं को अधिक से अधिक उत्तम और शिक्षाप्रद बनाया जाता है । मुझे यह जानकर काफी हर्ष होता है कि चन्दामामा भी उन पत्रिकाओं में से एक प्रमुख पत्रिका है जिसकी रचना उपरोक्त कथन को ध्यान में रखकर की गई है । चन्दामामा में मनोरंजनदायक, शिक्षापूर्ण व मनुष्य चरित्र व मस्तिष्क को पूर्ण रूप से विकसित करनेवाली रचनायें ही छपा करती हैं ।

विनयकृष्ण भावसिंहका, कलकत्ता-६

"मैं तो सिर्फ इतना ही कहूंगा कि 'चन्दामामा' के समान अनोखी मासिक पत्रिका पूरे भारत में नहीं प्राप्त की जा सकती । इसके मुखचित्र इतने आकर्षक और मनमोहक होते हैं कि देखते देखते खाना-पीना भूल जाना पड़ता है । इसके धारावाहिक उपन्यास भी गजब के होते हैं ।"

दिनेशचन्द्र "गजेन्द्र", जगदीशपुर

मैं पिछले पाँच वर्षों से चन्दामामा पढ़ता आ रहा हूँ लेकिन मेरे साहित्य की भूख मिटती ही नहीं। मैं ऐसा चाहता हूँ कि चन्दामामा की रोज़ एक नयी प्रति निकले और पढ़ते पढ़ते सारा दिन आनंद से गुज़रे। काश ऐसा होता, लेकिन मैं उस दिन की बड़ी उत्कंठा से राह देखूँगा। शायद पूरी हो जाये।

शेयनकुमार एच. आडवानी, जलगाँव

मैं आपके चन्दामामा का ग्राहक हूँ। इसमें दी हुई फोटो परिचयोक्ति में मुझे बहुत दिलचस्पी है। इसमें दी हुई कहानियाँ बहुत दिलचस्प होती हैं।

सतेन्द्रकुमार, फिरोज़पूर शहर

चन्दामामा एक ऐसी पत्रिका है, जिसमें हर तरह की मनोरंजक कहानी रहती है। पर हास्यमय कहानी और चुटकलों का अभाव खटकता रहता है।

नर्मदा प्रसाद विश्नोई, खड्गपुर

"मैं नियमित ८ साल से 'चन्दामामा' पढ़ रहा हूँ और इसी वजह से 'चन्दामामा' की एक पेटी भरी हुई मेरे पास है। 'चन्दामामा' के घर में आते ही मार-पीट और झगड़े शुरु हो जाते हैं। इसके अब पिताजी 'चन्दामामा' की दो प्रतियाँ मँगवा देते हैं। हमारे पढ़ने के बाद सब दोस्त पढ़ने के लिए ले जाते हैं। मेरा एक छोटा भाई जो चार साल का है 'चन्दामामा' के फोटो देखकर खुशी से चिल्लाता है और नाचता है। इस तरह हमारे घर में सब इसे चाव से पढ़ते हैं।"

हाजी अशरफ चीणी, चान्दा

मैंने आज चार पाँच साल पहले अपने पुत्र अश्वनी कुमार शर्मा के नाम पर चन्दामामा खुलवाना आरम्भ किया। यह सोचकर कि यह बच्चों का मासिक पत्र होगा पर यह जब आया तो देखा कि यह एक ऐसी पत्रिका है जो सब आयु के लोगों का मनोरंजन करती है। यह निश्चय ही एक उत्तम मासिक पत्रिका है। धन्यवाद!

के. सी. शर्मा, न्यूटन चिखली कालरी

पोली उमरीगर कहते हैं:—

‘पुट्ठों के दर्द, कमर का दर्द और मोच आदि से आराम पाने के लिये मैं स्लोन्स लिनिमेंट इस्तेमाल करता हूँ’

P. Umrigar
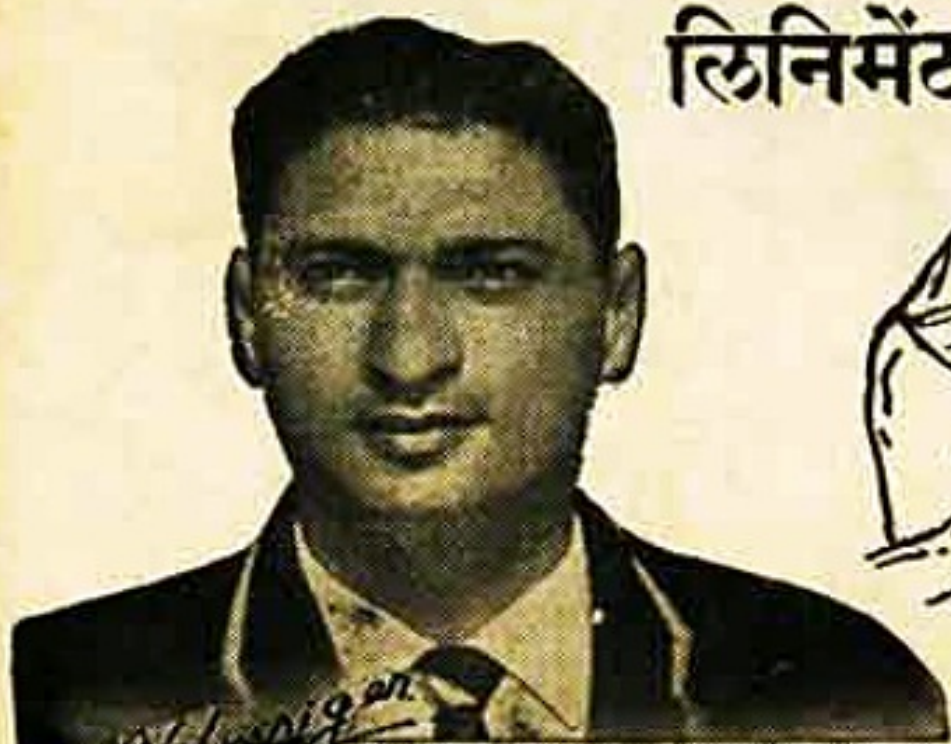
सुप्रसिद्ध मालिश विशेषज्ञ मालिक पोंकर कहते हैं: “तुरन्त आराम पाने के लिए मैं स्लोन्स लिनिमेंट इस्तेमाल करता हूं”

दुनिया के हर मुल्क की तरह भारत में भी खेलने-कूदने व दौड़ में भाग लेनेवाले खिलाड़ी पुट्ठों के दर्द पकड़, स्नायु खिंचाव (ऐंठन) और मोच से फौरन आराम पाने के लिए **स्लोन्स लिनिमेंट** इस्तेमाल करते हैं—जहां पीड़ा हो **स्लोन्स लिनिमेंट** लगाइये-फौरन पुट्ठों व जोड़ों का दर्द दूर होगा और आपको आराम पहुँचेगा–

स्लोन्स
लिनिमेंट

जोड़ों की सूजन, कमर का दर्द, वातशूल, गठिया, गर्दन की मोच आदि से फौरन आराम पहुँचाता है।

स्लोन्स बाम पुट्ठों के सभी प्रकार की शारीरिक पीड़ा से आपको तुरंत मुक्त करने की इसमें तिगुनी शक्ति है।

वार्नर-लेम्बर्ट फार्मेस्युटिकल कम्पनी (सीमित दायित्व के साथ यू. एस. ए. में स्थापित)

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

हम कई वर्षों से "चन्दामामा" में वेताल कथायें प्रकाशित करते आ रहे हैं।

इनकी लोकप्रियता असाधारण रही है, यह पाठकों के पत्रों से आसानी से अन्दाज लगाया जा सकता है।

कई यह भी लिखते हैं कि वेताल कथाओं का प्रकाशन समाप्त कब होगा।

और कई यह लिखते हैं कि मूलतः वेताल कथायें पचीस ही हैं और आपने कितनी ही कहानियां छापदी हैं। हम यही कहेंगे कि वे सब कल्पित हैं। कई का यह भी आग्रह है कि उनको पुनः प्रकाशित किया जाय।

जब तक हमारे अधिकांश पाठक "वेताल की कथायें" जैसी कथाओं की मांग करते रहेंगे, हमें कहना होगा, हमें उनका प्रकाशन भी करते रहना होगा।

वर्ष: १३ दिसम्बर १९६१ अंक: ४

भारत का इतिहास

कभी कहा जाता था कि संसार में सबसे अधिक प्राचीन सभ्यतायें मिश्र, असीरिया और बेबिलोनिया की थीं।

परन्तु पंजाब और सिन्धु प्रान्त के हरप्पा, मोहन्जदारो के नगरों के अवशेषों से ज्ञात हुआ है कि हमारे देश में पाँच हज़ार वर्ष पूर्व एक उत्कृष्ट सभ्यता थी—वह ही कालक्रम से भारतीय सभ्यता के रूप में विकसित हुई। यह ही सिन्धु सभ्यता थी।

मोहन्जदारो, हरप्पा के नगरों से वहाँ की सभ्यता के बारे में बहुत-सी बातें जान सकते हैं।

मोहन्जदारो बाढ़ के कारण, या किसी और कारण से नष्ट कर दिया गया—और सात बार पुनर्निर्मित हुआ। उसके बाद वह खण्डहर मात्र ही रह गया।

यह बहुत बड़ा नगर था। बहुत-से घर थे। उनमें दो कमरों के घर थे और बड़े-बड़े महल भी। इन्हें जलाये गये ईंटों से बनाया गया था। बड़े-बड़े घर तिमंज़ले भी थे। घर के चारों ओर खाली आँगन थे। घरों में दरवाज़े, खिड़कियाँ वगैरह भी थीं। सीढ़ियाँ भी थीं।

प्रायः सभी घरों में कुँये और नाले और स्नानगृह थे। घर के आहाते में पत्थर चिने हुए थे।

नगर में कुछ बड़े-बड़े मकान भी थे। ये शायद सार्वजनिक उपयोग के लिए थे। इनमें उल्लेखनीय एक बड़ी स्नानशाला थी। यह ३९ फीट लम्बी और २३ फीट चौड़ा नौ फीट गहरी था। इसके चारों ओर सीढ़ियाँ थीं—कमरे थे। स्नानशाला में

पानी के आने जाने के लिए आवश्यक व्यवस्था थी।

यह स्नानशाला इतनी अच्छी तरह बनाई गई थी कि पाँच हज़ार साल बाद, यह आज भी सुरक्षित-सी है।

नगर के मार्ग चौड़े और सीधे थे। इसमें सन्देह नहीं कि नागरिकों का जीवन सुखी और सभ्य था। उस समय के संसार में उतना सुन्दर नगर कहीं और शायद न था।

यहाँ के लोगों का आहार गेहूँ, बार्ली, खजूर, दाल, मछली और अंडे वगैरह था। उनके कपड़े सूती और ऊनी होते थे। स्त्री और पुरुष आभूषण पहिना करते थे। ये मालायें, केश आभूषण, अंगूठी आदि थे।

स्त्रियों के आभूषणों में कमरबन्द, नथ, बालियाँ, कड़े वगैरह कितनी ही तरह के गहने थे। कई बहुत सुन्दर भी थे। इन्हें सोना, चान्दी, दान्त, ताम्बा, हीरे आदि से बनाया जाता था।

घरों में उपयुक्त होनेवाले पात्र, मुख्यतः मिट्टी के थे, जो कुम्हार चाक पर बनाया करते थे। ताम्बे, काँसे, चान्दी के पात्र

हरप्पा के अवशेष

बहुत कम हैं। कहीं लोहा देखने को भी नहीं मिला। घरेलू उपकरणों में सूइयाँ, कंघे, चाकू, बँसियाँ—ताम्बे और काँसे के बने उस्तरे आदि मिले। यहाँ शतरंज की पट्टियाँ भी मिलीं। शतरंज का खेल, स्पष्ट है, यहाँ खेला जाता था।

इस नगर के पालतू जन्तुओं में साँड, भैंसे, भेड़, हाथी, ऊँट, कुत्ते मुख्य थे।

उन दिनों शायद घोड़े न थे। उनके लिए भाले, फरसे, गदा और कुल्हाड़ी आदि मुख्य अस्त्र थे। न ये शिरस्त्राण,

ढ़ाल आदि रक्षा के साधनों से ही परिचित थे।

सिन्धु सभ्यता के समय की कला काफ़ी विकसित थी। हरप्पा में जो मूर्तियाँ मिली हैं, वे ग्रीक मूर्तियों से किसी भी दृष्टि में कम नहीं हैं।

इस नगर के लोग, भारत में ही नहीं, एशिया के अन्य देशों के कई नगरों से व्यापार करते थे। यहाँ जो मुद्रायें काफ़ी मात्रा में मिली हैं, वे मेसेपोटोमिया में भी मिली हैं।

यहाँ के लोग तरह तरह के व्यापार और वृत्तियाँ किया करते थे। यहाँ के लोग, देवी पूजक थे, वे एक पुरुष देवता को भी पूजते थे। इस पुरुष देवता की मूर्ति को देखकर लगता है कि शिव की वह आदि मूर्ति थी। लोग मूर्ति पूजक थे। प्रकृति की भी आराधना करते थे।

सिन्धु सभ्यता आर्यों की न थी। वह ऋग्वेद काल से पूर्व की है। आर्य नागरिक जीवन से परिचित न थे। कई का कहना है कि वे मूर्ति पूजक न थे। लोहे का उपयोग जानते थे। कई का कहना है कि यह सभ्यता द्राविड़ों की थी। कई का कहना है कि वह सुमेरिनों की थी— कई और का कहना है कि दोनों एक ही थे। कुछ भी हो, भारतीय सभ्यता में, जो ऐतिहासिक प्रक्रिया के रूप में विकसित हुई, जितनी वैदिक संस्कृति की मात्रा है, उतनी ही सिन्धु सभ्यता की भी मात्रा है, शायद उससे कुछ अधिक ही।

मोहन्जोदारो नगर स्नानशाला

पंचम अध्याय

महाकाल-सा वीरभद्र था
सेना विकट विशाल,
धूल उड़ाते आते थे वे
करते शब्द कराल।

उत्तर दिशा धूल से उनकी
हुई अचानक लाल,
काँप रही थी धरती, उनकी
थी ऐसी ही चाल।

ऐसा ही लगता था, करने
दक्षिण दिशि को ग्रास,
उत्तर दिशा चली आती है
गरम छोड़ती साँस।

दक्ष-यज्ञ में विघ्न पड़ेगा
ऐसा कर अनुमान,
हुए देव-मुनि सारे चिंतित
उचटा भृगु का ध्यान।

सिर पर विपदा नयी देखकर
हुआ दक्ष भयभीत,
भृगु को भी पा विचलित उसने
जाना सब विपरीत।

आनन-फानन में शिव के गण
आये बिलकुल पास,
प्रलय-सिंधु की लहर उमड़कर
आयी हो ज्यों पास।

वीर भद्रने हाथ उठाकर
दिया एक संकेत,
और घुसा तब यज्ञ-सभा में
अपने सैन्य समेत।

यज्ञ-कुण्ड को तोड़-फोड़कर
मंडप भव्य उजाड़,
करने शिव-गण लगे वहाँ पर
सब का ही संहार!

“भारतीभक्त”

चिल्लाये ऋषि-मुनिगण सारे
देख रक्त की धार,
बाँध उन्हें झट दियागणों ने
हुए सभी लाचार।

मार-काट फिर मची कि ऐसी
सूखे सबके प्राण,
पागल-से सब लगे भागने
मिले कहीं भी त्राण!

स्त्रियाँ औ' बच्चे जो थे
उनकी क्या हो बात,
काँप रहे थे थर-थर जैसे
पीपल के हों पात।

विकट रूपवाले शिव के गण
थे जो भूत-पिशाच,
डरा रहे थे उन सबको ही
और रहे थे नाच!

वीरभद्र भी त्रिशूल थामे
कर में अति विकराल,
प्रलय-नृत्य था करता जिससे
काँप सब दिक्पाल।

जो भी मिलता उसे मौत की
देता घाट उतार,
'त्राहि त्राहि' मच गयी वहाँ पर
भारी चीख-पुकार।

भागे डरकर सभी देवता
भागे सब भूपाल,
सुनता किसकी कौन वहाँ पर
सब ही थे बेहाल।

वरुण देवता, वायु देवता,
भागे सब दिग्पाल,
ऐरावत पर चढ़े इन्द्र भी
भागे थे तत्काल।

घबड़ाये-से भागे चढ़कर
भैंसे पर यमराज,
डरती जिससे दुनिया सारी
डरे वही थे आज।

कुबेर की हालत थी ऐसी
रहा नहीं कुछ ध्यान,
वाहन को ही लाद पीठ पर
भागे तीर समान।

इधर दक्ष को ढूँढ़ रहा था
वीर भद्र अति व्यग्र,
उधर दृष्टि थी भृगु के ऊपर
नंदी की अति वक्र।

उसने झट भृगु की लम्बी औ'
उजली दाढ़ी खींच,
कहा—"मजा अब चख शिवद्रोही।
आँखें मत यों मींच!"

दाढ़ी उखड़ गयी सब पल में
हुआ साफ मैदान,
तीव्र वेदना से भृगु की तो
लगी निकलने जान।

'रक्षा करो! करो अब रक्षा!!'
चिल्लाता था दक्ष,
वीरभद्र ने उसे पकड़कर
किया खड्ग का लक्ष।

लेकिन निष्फल वीर भद्र का
गया दक्ष पर वार,
नहीं असर कुछ पड़ा दक्ष पर
भोथी हो ज्यों धार।

वीरभद्र ने तब त्रिशूल का
किया ज़ोर से वार,
फिर भी गर्दन कटी न तिल भी
गयी व्यर्थ वह मार।

फेंक दूर दी वीरभद्र ने
तब त्रिशूल-तलवार,
और पाँव से दबा दक्ष को
सिर ही लिया उखाड़।

फिर उसने उस सिर को तत्क्षण
दिया आग में झोंक,
केवल मुनिगण रहे देखते
सका न कोई टोक।

साहस कर मुनिबालाएँ ही
पहुँचीं उसके पास,
बोलीं—"वीर, रुको भी अब तो
करो न यों सब नाश!"

वीरभद्र बोला यह सुनकर—
"मेरा क्या है हाथ,
जाकर शिव के निकट कहो सब
और झुकाओ माथ।

किया यहाँ जो कुछ भी मैंने
था उनका आदेश,
नहीं रहेगा शिवद्रोही अब
भूमंडल में शेष!"

यज्ञ-सभा लगती थी जैसे
कोई लगे मसान,
भूँक रहे थे गीदड़ शव पर
और झगड़ते श्वान! (सशेष)

[५]

[विचित्र जन्तु के रूप में आये हुए मान्त्रिक के शिष्य जगमल के मुख से केशव ने बहुत सी बातें जान लीं। त्राम्रदण्डी मान्त्रिक ने केशव को बताया कि वह अपनी मन्त्र-शक्ति से भूकम्प लाया था। फिर उसने अपने शिष्य को बुलाकर आज्ञा दी कि वह केशव को हाथियों के झरने में स्नान करवाकर लाये। बाद में—]

त्राम्रदण्डी मान्त्रिक की आज्ञा सुनते ही जयमल, केशव का हाथ पकड़कर, वहाँ से चला। केशव सोचता-सोचता कुछ दूर निकला। यह सब देख मुझे अचरज हो रहा है। यह कैसे विश्वास किया जाय कि वह अपनी मन्त्र-शक्ति से इतने बड़े पहाड़ को हिला सका।

"उसकी मन्त्र-शक्ति के कारण भूकम्प आया, मैं नहीं विश्वास करता। मुझे सन्देह है कि पहाड़ में कुछ विस्फोटक धातुयें थीं। इनके कारण, हो सकता है, कभी-कभी पहाड़ फूट पड़ता हो तब-तब यह सम्भव है कि मान्त्रिक शेखियाँ मारता हो कि वह सब उसके कारण ही हुआ है। इस सब का क्या कारण है, निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता।" उसने कहा।

तब तक वे पहाड़ में एक ऐसी सपाट जगह पहुँच गये थे, जहाँ पास में एक
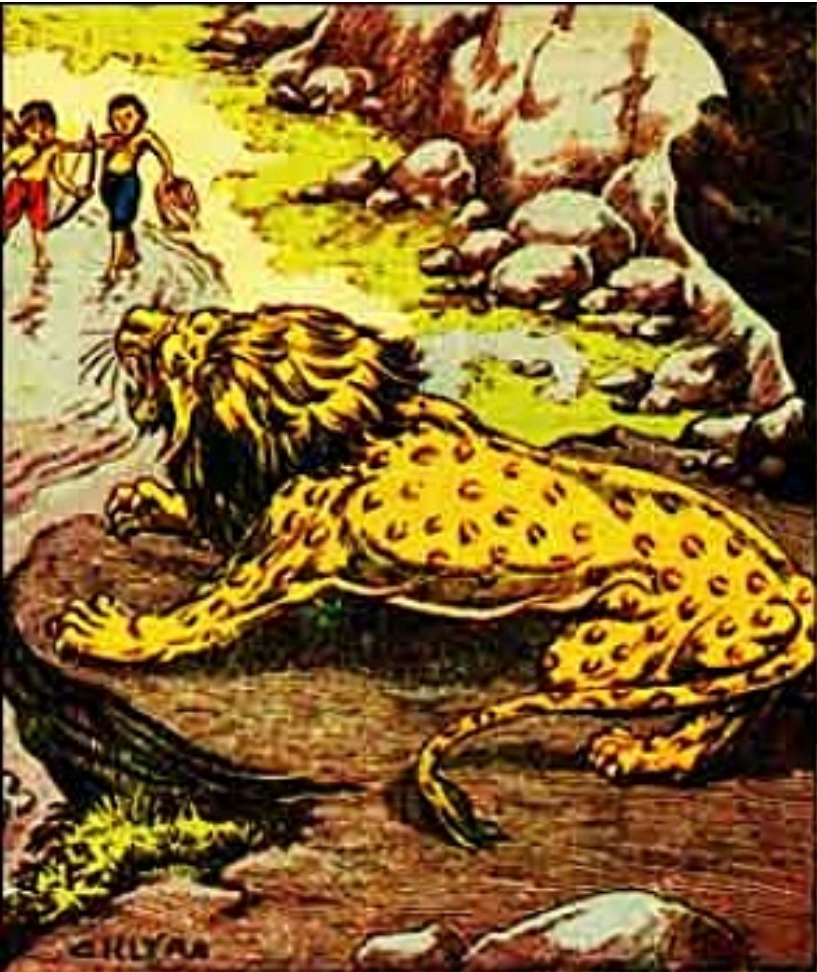
झरना भी था। वे झरने के पास थे कि उसके पास के गुफा में से एक शेर ने गर्जन किया। उसके बाद अपने सिर के बाल हिलाता वह गुफा से बाहर निकला और ज़ोर से गरजता एक पत्थर पर चढ़कर खड़ा हो गया।

"यही हाथियों का झरना है और जो शेर गुफा में रहता है, वह ही दागोंवाला शेर है।" जयमल्ल कहता कहता ज़ोर से हँसा।

"सभी कुछ यहाँ आश्चर्यमय है। कहीं ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक ने मुझे इस शेर के लिए आहार बनाकर तो नहीं भेजा है!" सन्देह करते हुए, केशव ने जयमल्ल की ओर देखा। जयमल्ल सिर उठाकर दागोंवाले शेर की ओर देख रहा था। शेर पंजा उठा उठाकर ज़ोर-ज़ोर से गरज रहा था।
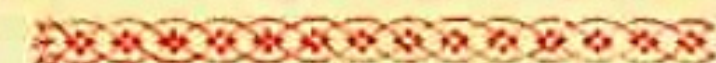
केशव ने कुछ देर तक गौर से शेर की ओर देखा। उसे लगा कि वह किसी क्षण उस पर कूद सकता था।

केशव ने यह सोचते-सोचते धनुष पर बाण चढ़ाकर शेर की ओर निशाना लगाया। वह बाण छोड़नेवाला ही था कि जयमल्ल ने "कोंकारी, ओंकारी" कहता, केशव की ओर मुड़कर कहा—"अरे, तुम क्या करने जा रहे हो! तुम सोच रहे हो कि तुम इस शेर को बाण से मार सकते हो! मैं मन्त्र पढ़कर, उसका मुख बन्द करने जा रहा हूँ! फिर भी देखें, बाण छोड़ो। क्या होता है।"

केशव ने शेर के सिर पर बाण छोड़ा। बाण साँय-साँय करता, उसके सिर पर लगा और घूमता-घूमता हवा में उठा और पासवाले झरने में गिर गया।

"देखा, तुम्हारा एक बाण फालतू हो गया और शेर का कुछ भी न हुआ। यह
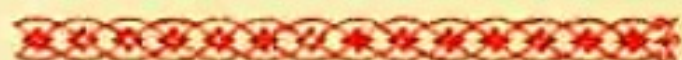
व्याघ्रदण्डी का पालतू शेर है। वह कहा करता है कि उसने ऐसा दागोंवाला शेर बनाया है, जो संसार में कहीं और नहीं है। पर मैं विश्वास नहीं करता। वह मान्त्रिक ही तो है, ब्रह्मा तो नहीं है। इसे उसने जब वह बच्चा ही था, तब पकड़ लिया होगा और इस पर उसने चीते की खाल जोड़ दी होगी। यह मेरा सन्देह है।" जयमल्ल ने कहा।

"यह असम्भव है—यदि एक जन्तु की खाल को, दूसरे जन्तु की खाल पर जोड़ दिया जाय, तो उसकी अपनी खाल से यह कैसे मिल सकता है! तुम तो निरे नादान मालूम होते हो।" केशव ने कहा।

"तो, शायद उसने यह किया हो—जब यह मिला होगा, तभी उसने इसके शरीर पर जला कर दाग कर दिये होंगे।" जयमल्ल ने कहा।

"हां, यह ज़रूर हो सकता है। मगर इन सब बातों की ज़रूरत ही क्या है! इस शेर के कारण मुझ पर तो कोई खतरा नहीं आनेवाला है, यह पहिले बताओ।" केशव ने ऊबकर पूछा।

"खतरा तो कुछ नहीं है। इतने दिनों से मान्त्रिक का शिष्य हूं, क्या मैं इतनी भी मन्त्र-शक्ति नहीं जानता हूं कि जानवरों को मन्त्रों से वश में कर सकूं। देखा, उसे मैंने कैसे वश में कर लिया है! अब थोड़ी देर में वह बिल्ली की तरह पेट के बल लेट जायेगा।" जयमल्ल ने कहा।

देखते देखते शेर ने गले के बाल हिलाये। इस तरह मुख खोला, जैसे अंगड़ाई ले रहा हो, फिर छिपकली की तरह पत्थर पर लेट गया। केशव, जयमल्ल की मन्त्र-शक्ति देखकर मुग्ध हो गया।
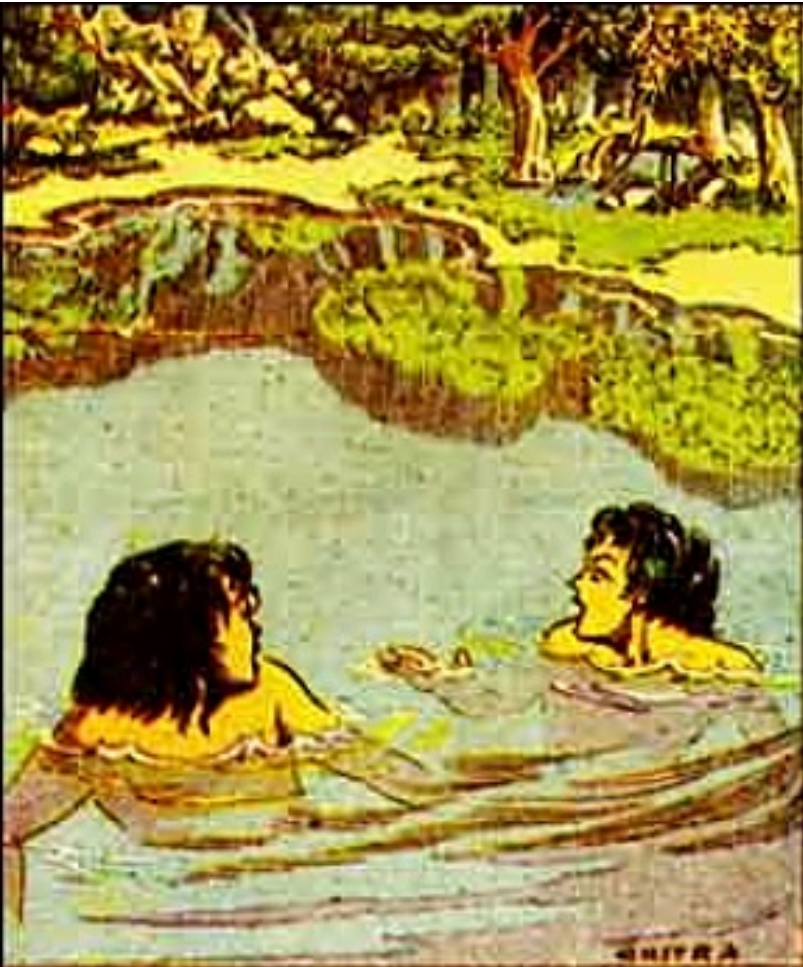
यदि यह सचमुच मेरा मित्र है, ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक के चुंगल से आसानी से निकला जा सकता है।

जयमल ने हाथियों के झरने में कई बार डुबकियाँ लगाई। "अरे देख क्या रहे हो! केशव उतरो, नहाओ। हमारे लिए ब्राह्मदण्डी प्रतीक्षा कर रहा होगा।"

केशव धनुष बाण किनारे पर रखकर झरने में उतरकर नहाने लगा। नहाकर शुद्ध होने के बाद, उसे लगा कि मान्त्रिक कालभैरव को उसे बलि दे देगा।

केशव ने अपने सन्देहों के बारे में जयमल से पूछना चाहा। परन्तु जयमल तब तक झरने में तैरता-तैरता बहुत दूर चला गया था। केशव धीमे-धीमे तैरता उसके पास गया। अपने भय के बारे में पूछने के लिए होंठ खोले ही थे कि झरने के उस तरफ से पत्थरों के लुढ़कने के साथ, हाथियों का चिंघाड़ना सुनाई दिया।

"लगता है कि हाथियों का झुन्ड झरने के पास आ रहा है।" केशव ने कहा।

"इसका नाम ही हाथियों का झरना है। तब इसमें नहाने के लिए हाथी न आयेंगे, तो और कौन आयेगा?" जयमल ने जोर से हँसते हुए कहा।

"अगर यही बात है, तो चलो, यहाँ से जल्दी भाग जायें। यदि वे आ गये, तो हम उनके पैरों के नीचे मिट्टी मिट्टी हो जायेंगे।" केशव जल्दी-जल्दी किनारे की ओर तैरने लगा।

जयमल, केशव का भय देखकर जोर से हँसा। इतने में कुछ हाथी, एक दूसरे को रगड़ते हुए, सूंडों से झरने के पास के पेड़ों को तोड़ते हुए झरने के पास आये।

उनको देखते ही जयमल्ल ने डुबकी लगाई। फिर ऊपर उठकर उसने कोई मन्त्र पढ़ा। फिर उनकी ओर उसने कुछ कीचड़ फेंकी। तुरत आगे आते हुए हाथी और उनके पीछे आनेवाले हाथी, जहाँ जहाँ थे, वहाँ वहाँ पथरा से गये।

"देखी हमारी शक्ति!" जयमल्ल केशव को देखकर जोर से चिल्लाया। फिर वह धीमे-धीमे तैरता केशव के पास आया। केशव के आश्चर्य की सीमा न थी। उसने सोचा कि हो न हो, जयमल्ल बड़ा मान्त्रिक था।

जैसे उसने केशव के मन की बात जान ली हो, जयमल्ल ने सिर हिलाकर कहा—"भूत, जन्तुओं और पक्षियों को वश में कर लेना कोई बड़ी शक्ति नहीं है। इस तरह की छोटी मोटी बातें, ब्रह्मदण्डी बिना हाथ पैर हिलाये कर सकता है। भयंकर घाटी में जाकर जिस दिन हम वहाँ के खजानों को ले सकेंगे, उसी दिन हम अच्छे मन्त्रवेत्ता हो सकते हैं।"

"वह भयंकर घाटी कहाँ है!" केशव ने पूछा।

"यदि यही मालूम हो जाये, तो और जानने के लिए रह ही क्या जाता है! वह जानने के लिए ही तो, मैं ब्रह्मदण्डी की इतने दिनों से सेवा कर रहा हूँ।" जयमल्ल ने कहा।

यह सुन वह जान गया कि क्यों जयमल्ल की मान्त्रिक से न पटती थी। उस भयंकर घाटी में खजानों को पाने के लिए ही शायद वे मेरा उपयोग करना चाहते हैं।

जयमल्ल ने ऊपर के कपड़े से अपना शरीर पोंछकर केशव की ओर मुड़कर कहा—"अरे, जल्दी करो, चलो, चलें।"

केशव जल्दी-जल्दी शरीर पोछकर, धनुष बाण लेकर उसके पीछे चला। जयमल ने दो कदम आगे रखे। फिर उसने कहा—"यदि वह हाथियों का झुन्ड मर गया तो हमें क्या मिलेगा?" उसने पीछे मुड़कर कोई मन्त्र पढ़ा, तालियाँ बजाकर कहा—"हाथियो! अब तुम झरने में नहा सकते हो।"

हाथी इस तरह आगे बढ़े जैसे किसी ने आज्ञा दी हो, झरने में जा कूदे।

जयमल ने एक कंकड़ उठाकर, दागोंवाले शेर की ओर फेंककर कहा—"अब तुम भी अपना गर्जन प्रारम्भ कर दो।" तुरत शेर पत्थर पर जा खड़ा हुआ और इतनी ज़ोर से गरजने लगा कि उनको कान फूट से गये। उसका गर्जन सुन झरने में नहानेवाले हाथी भी चिघांड़ने लगे।

"जब कभी मैं झरने में नहाने आता हूँ, तब यही होता है। हाथी और शेर घंटों इस तरह गरजते-चिघांड़ते रहते हैं, फिर वे अपने अपने शिकार पर चले जाते हैं।" जयमल ने सन्तुष्ट होकर कहा।

जयमल का रुख केशव को अखर-सा रहा था। थोड़ी देर में मान्त्रिक के कारण उस पर आपत्ति आनेवाली थी। पर जयमल को इसकी कुछ भी परवाह न थी। और तो और वह इस तरह खुश हो रहा था, जैसे कोई बड़ा काम कर दिया हो।

"तुमने कहा था कि आज से हम दोनों दोस्त हैं। परन्तु जो आपत्ति मुझ पर आनेवाली है, उससे मेरी रक्षा करने के लिए तुम कुछ सोचते करते नहीं मालूम होते।" केशव ने कहा।

जयमल ने सिर उठाकर पहाड़ की चोटी की ओर देखा। उसने देखा कि वहाँ एक

बड़े पत्थर के सहारे खड़ा-खड़ा ब्रह्मदण्डी उनकी ओर देख रहा था। तुरत जयमल्ल ने केशव को सावधान करते हुए कहा—

"तुम इतनी ज़ोर से बातचीत न करो। उसके कान बड़े तेज़ हैं। तुम्हारी रक्षा करना मेरा लिये बड़ा आवश्यक है। भयंकर घाटी में जाने के लिए कौन योग्य है, यह मैं भी ब्रह्मदण्डी के साथ आज ही जान सका। तुमने स्वयं ही देखा था कि तुम्हारे कन्धे पर के सांप का निशान देखकर वह कितना खुश हुआ था। आज रात तुम्हें कोई शक्ति देकर वह तुम्हारे मुख से भयंकर घाटी के मार्ग और वहां के निधियों के बारे में कहलवा देगा। उस जानकारी के मिलने के बाद हम ब्रह्मदण्डी को दूसरे लोक में भेज देंगे। घबराओ मत।"

"यदि हम से पहिले उसने ही हमें दूसरे लोक भेज दिया तो!" केशव ने सन्देह प्रकट करते हुए कहा।

"वह यह नहीं कर सकता। अभी उसे धन और कीर्ति के भूत पकड़कर सता रहे हैं। इसलिए उसमें सांकेतिक ज्ञान लुप्त हो गया है, नहीं तो वह क्यों हमें इस तरह मिल-जुलकर घूमने फिरने देता!" जयमल्ल ने कहा।

पहाड़ पर से ब्रह्मदण्डी खड़ा खड़ा उनकी ओर देख रहा था। वह सहसा मुस्कराया। वह चिल्लाया—"शिष्य जयमल्ल, आते आते कुछ बिल की समिधायें आदि ले आना। कालभैरव भूख के कारण व्याकुल है। हज़ार साल में एक ही बार उपासकों के इस आराध्य को भूख लगती है।" (अभी है)

निषिद्ध सत्य

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह फिर पेड़ के पास गया। शव उतार कर कन्धे पर डाल, हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, क्या तुम किसी सत्य को जानने के लिए आधी रात के समय यों कष्ट उठा रहे हो? अगर यही बात है तो तुम अपना यह प्रयत्न छोड़ दो। क्योंकि कभी-कभी सत्य को जानना भी बड़ा खतरनाक है। यह निरूपित करने के लिए मैं तुम्हें रसलुब्ध की कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" उसने यों कहानी सुनानी शुरु की।

किसी ज़माने में रसलुब्ध नाम का एक महाराजा था। उसकी तीन पत्नियाँ थीं। तीनों ही असाधारण रुप से सुन्दर थीं। किसी एक को देखने से लगता था कि उससे अधिक सुन्दर स्त्री संसार में कहीं

बेताल कथाएँ

न होगी। इस तरह की तीन असाधारण स्त्रियाँ उसकी पत्नियाँ थीं, इसलिए राजा फूला न समाता था।

गरमियों में, खिली चान्दनी में राजा अपनी तीनों पत्नियों के साथ हवा में सोया हुआ था। किन्तु वह यकायक उठा। चान्दनी में उसे लगा, जैसे उसकी पत्नियाँ अप्सरायें हों।

इतने में उसे एक सन्देह हुआ। क्या मेरी स्त्रियाँ संसार में सबसे अधिक सुन्दर हैं, पर उनमें सबसे अधिक सुन्दर कौन है? यह जानना होगा।

इस सन्देह का निवारण करने के लिए राजा ने अपनी पत्नियों को एक-एक करके गौर से देखा। वह बहुत देर तक देखता रहा, पर उनके सौन्दर्य में उसे कोई भेद न दिखाई दिया। तीनों समान लगीं। परन्तु उसका सन्देह कम न हुआ। वह सच मालूम करने के लिए उतावला हो उठा। वह उस दिन रात को सो न सका। करवटें बदलता रहा।

सवेरा होते ही नित्यकृत्य समाप्त करके वह दरबार में गया। उसके मन्त्री ने, जिसका नाम नयनेत्री था उसे देखते ही कहा—"राजा, आपकी आँखें लाल हैं, जैसे सोये ही न हों। क्या कारण है?"

"मन्त्री, मेरे दिमाग में एक सन्देह घर कर गया है—इसलिए सो नहीं पाता हूँ। अभी तक मेरे सन्देह का निवारण नहीं हुआ है। मेरी तीनों पत्नियों में सबसे अधिक सुन्दर कौन है? बहुत सोचा, पर अभी तक मुझे इसका उत्तर नहीं मिला है।" राजा ने कहा।

"महाराज, क्या इससे यह स्पष्ट नहीं होता है कि तीनों समान रूप से सुन्दर हैं। कोई एक दूसरे से कम नहीं है, आपस में

ईर्ष्या करने के लिए कोई आधार नहीं है! आप इस बात पर यूँही चिन्ता न कीजिये।" नयनेत्री ने कहा।

"नहीं मन्त्री, मुझे सच मालूम करना ही होगा। नहीं तो मुझे शान्ति न मिलेगी।" राजा ने कहा।

नयनेत्री ने सोचा कि राजा का मन इस बात से हटाना सम्भव न था। उसने महाराजा से कहा—"महाराज, हमारे नगर में एक ब्राह्मण युवक आया है। उसका नाम कान्तिमह है। उसके बारे में यह प्रसिद्ध है कि स्त्रियों के सौन्दर्य को जाँचने में उससे बढ़कर कोई नहीं है। उसे बुलाकर तीनों रानियों को बुलवाइये। तीनों में किसका सौन्दर्य सबसे अधिक है, वह यों बतायेगा, जैसे नाप तोल कर बता रहा हो।"

राजा को यह सलाह जँची, वह कान्तिमह को बुलाकर एक कमरे में उससे बातें करता रहा। पहिले की गई व्यवस्था के अनुसार तीनों रानियाँ एक बाद एक, राजा के कमरे में से गुजरीं।

पहिली रानी को देखकर कान्तिमह को काठ-सा मार गया।

दूसरी को देखकर वह सकुचा गया। ऐसा हिला जैसे अलस उतार रहा हो।

तीसरी रानी के उस तरफ़ जाने पर उसके चेहरे का रंग उड़-सा गया।

तीनों के चले जाने के बाद राजा ने कान्तिग्रह से कहा—"ब्राह्मण! सुना है, तुम सौन्दर्य निपुण हो। अब बताओ, तीनों रानियों में कौन अधिक सुन्दर है, तुमने सबको देख ही लिया है।"

कान्तिग्रह ने मन ही मन सोचा—"बिना यह मालूम किये कि इनकी प्रिय रानी कौन है, यह बताना खतरनाक होगा कि उनमें सबसे अधिक सुन्दर कौन है। यदि उनकी प्रिय पत्नी को सबसे अधिक सुन्दर न बताया गया, तो राजा अवश्य क्रुद्ध होगा। यही नहीं, यदि तीनों रानियों में एक को दूसरों से अधिक सुन्दर बताया गया, तो बाकी दोनों नाराज़ हो जायेंगी और किसी न किसी तरह मेरे प्राण लेने की कोशिश करेंगी।"

इस तरह कान्तिग्रह सोचता रहा। वह राजा के प्रश्न का उत्तर दे सकता था, पर उसने राजा से विनयपूर्वक कहा—

"महाराज, मुझे सोचने के लिए कल तक समय दीजिये।" राजा इसके लिए मान गया। उसने कान्तिमह को सादर भिजवा दिया।

उस ब्राह्मण युवक के चले जाने के बाद नयनेत्री ने राजा से कहा—"महाराज, यह युवक यद्यपि आपके प्रश्न का उत्तर जानता है, तो भी इसने सोचने के लिए समय माँगा है। मेरा ख्याल है। वह सच बताने के लिए डर रहा है। मुझे डर है कि आज रात को वह नगर छोड़कर चला जायेगा।"

यह सुन राजा घबराया। "वह ब्राह्मण युवक जो जानता है, उसे हम जान सकें इसके लिए क्या उपाय है?"

"मैं इसके लिए आवश्यक उपाय सोच निकालूँगा। आप चिन्ता न कीजिये।" नयनेत्री ने कहा।

उसकी चाल चल गई। राजा जान गया कि तीनों रानियों में कान्तिमह के विचार में कौन अधिक सुन्दर थी। वह उस रानी को अधिक चाहने लगा और बाकी दोनों को ठुकराने लगा। यह देख दोनों रानियों ने उस रानी

को जहर देकर मार दिया। यह सबको मालूम हो गया।

राजा ने अपनी दोनों रानियों को मृत्यु का दण्ड दिया। इस तरह राजा के सन्देह ने तीनों रानियों का खातमा कर दिया। नयनेत्री की सलाह न सुनकर राजा ने अपना बेड़ा स्वयं डुबा लिया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा—"राजा, कान्तिग्रह के निर्णय को मालूम करने के लिए नयनेत्री ने क्या उपाय सोचा था? क्या वह सम्भव है? नयनेत्री का उपाय कैसा था? अगर तुमने जान बूझकर इन प्रश्नों का उत्तर न दिया, तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा।"

विक्रमार्क ने कहा—"नयनेत्री के लिए कान्तिग्रह के मन की बात जान लेना बहुत कठिन न था। वह युवक सौन्दर्य निपुण था। राजा की पत्नियाँ बहुत सुन्दर थीं। उसने कान्तिग्रह के नाम तीन जाली पत्र लिखवाये होंगे, जैसे रानियों ने स्वयं लिखा हो। तीनों ने उसे पत्रों में एक गुप्त जगह मिलने के लिए कहा होगा। वह चूँकि तीनों जगह एक साथ तो जा न सकता था—वह उसी रानी के पास गया होगा, जो उसकी नज़र में सबसे अधिक सुन्दर थी। मन्त्री के गुप्तचर उसके पीछे थे ही, उन्होंने मालूम कर लिया होगा कि वह कहाँ गया था। उन्होंने मन्त्री को बताया होगा। मन्त्री ने ही क्योंकि चिट्ठियाँ लिखवायी थीं, इसलिए वह जानता ही होगा कि वह जगह कौन-सी थी। इस तरह साफ़ हो जायेगा कि वह औरों से अधिक सुन्दर थी।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

लक्ष्मी की कृपा ★ [रामतीर्थ कथा]

एक राजा के यहाँ एक प्रधान मन्त्री था। उसने लक्ष्मी का साक्षात्कार करना चाहा। उसने इसके लिए बहुत से जप तप किये। लक्ष्मी का सहस्र नाम सौ बार पढ़ा। लक्ष्मी देवी प्रत्यक्ष न हुई।

होते होते उसे इह लौकिक सुखों से विरक्ति हो गई। लक्ष्मी के दर्शन वह कभी कर सकेगा, उसका यह विश्वास भी जाता रहा। वह सन्यास ग्रहण करके, जँगल में तपस्या करने निकल पड़ा। उसे यकायक रास्ते में लक्ष्मी दिखाई दीं। उसने कहा—"मेरे दर्शन के लिए जो तुमने पूजा वगैरह की है वह देख मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करने आयी हूँ।"

"जाओ जाओ—मेरी इच्छायें पूरी हो गई हैं। मैंने सब छोड़कर सन्यास ले लिया है, जब दर्शन चाहे थे, तब दिखाई न दीं और अब व्यर्थ दर्शन देती है!" सन्यासी ने कहा।

"जब तक तुम मेरे दर्शन के लिए तड़पते रहे, तब तक तुम भिक्षुक ही रहे। मैं भिक्षकों को दर्शन नहीं देती। क्योंकि याचना की प्रवृत्ति अब तुममें नहीं रही, इसलिए मैंने दर्शन दिये हैं।" लक्ष्मी देवी ने कहा।

अच्छाई की जीत होगी

एक पहाड़ के पास एक किसान घर बनाकर रहा करता था। बकरियों का एक झुन्ड ही उसकी सारी सम्पत्ति थी। उसके दो लड़के और एक लड़की थी।

एक दिन किसान की लड़की पहाड़ की चोटी पर बकरियाँ चरा रही थी कि आकाश से बादल-सी कोई चीज़ जहाँ वह थी, मँडराई जैसे किसी ने जादू किया हो और फिर ऊपर उठ गई। उसी समय वह लड़की भी गुम हो गई और बहुत खोजने पर भी न मिली।

एक वर्ष बीत गया। फिर वह दिन आया, जिस दिन वह लड़की गुम हो गई थी। किसान के बड़े लड़के ने पिता से कहा—"कल बहिन को गये एक साल हो गया था। उसको खोजे बिना बैठना मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं है। मैं जाकर उसको ढूढूँगा।"

"तुम्हारा बहिन को ढूँढने के लिए कहना मुझे मँजूर है। पर बिना मेरी अनुमति के स्वयं तुम्हारा इस निर्णय पर आना अच्छा नहीं है।" पिता ने कहा।

बड़े लड़के ने यूँ ही सिर हिला दिया। फिर उसने जाकर माँ से कहा—"माँ, रास्ते में खाने के लिए मुझे अच्छी रोटी बनाकर दो।"

माँ को यह जान कष्ट हुआ कि उसके बड़े लड़के ने उससे विनयपूर्वक बातचीत न की थी। उसने उससे पूछा—"बेटा, कहो बिना इच्छा के बड़ी रोटी बनाकर दूँ, या इच्छा से छोटी रोटी?"

"बिना इच्छा के ही बड़ी रोटी बनाकर दो। इच्छा से कहीं पेट भरता है!" बड़े लड़के ने कहा। वह माँ की दी हुई रोटी थैले में डालकर जल्दी जल्दी पैदल

निकल पड़ा। चलता चलता वह जंगल में पहुँचा। उसे भूख लग रही थी। इसलिए जब उसे एक साफ़ पत्थर दिखाई दिया तो उस पर बैठकर रोटी खाने के लिए उसने पोटली खोली।

इतने में कहाँ से कोई कौव्वा पंख फड़फड़ाता बड़े लड़के के पास एक बड़े पत्थर पर बैठकर, रोटी देखकर "का का" करने लगा।

"अबे जा कौव्वे। यह रोटी मेरे लिए ही काफ़ी नहीं है और तुम उसमें भी हिस्सा चाहते हो!" कहकर बड़ा लड़का पूरी रोटी खा गया। उसने कौव्वे को एक टुकड़ा तक न दिया। फिर उसने चलना शुरू किया। अन्धेरा होने पर वह एक पहाड़ पर चढ़कर उतर रहा था कि उसको सामने एक झोंपड़ा और उसमें दिया टिमटिमाता दिखाई दिया।

वहाँ रात भर विश्राम करने का निश्चय करके बड़ा लड़का उस घर के पास आया। उस घर का मालिक सौ बर्ष का बूढ़ा लगा। उसने किसान के लड़के का स्वागत किया। भोजन खिलाकर पूछा—"क्यों भाई, मेरे यहाँ काम करोगे? मेरे पास तीन गौवें हैं। उन्हें चराने के लिए आदमी चाहिये।"

"मैं यूँ तो अपनी बहिन को ढूँढने निकला हूँ। अगर मुझे फ़ायदा होता हो, तो मुझे गौवें चराने में कोई आपत्ति नहीं है।" बड़े लड़के ने कहा।

"यदि तुमने मेरे कहे अनुसार गौवें चराईं तो तुम्हारे परिश्रम का अच्छा परिणाम होगा, इस बारे में तुम सन्देह न करो। देखो, जब तुम गौवों को चराने ले जाओ, तो उनको तुम जहाँ चाहो वहाँ न ले जाना। बल्कि वे जिधर जायें, तुम

भी उधर जाओ। जो कुछ वे खायें उन्हें खाने दो। परन्तु तुम उन्हें छोड़कर अपने रास्ते न जाओ। ये घर छोड़कर जब तक घर वापिस न आ जायें, तब तक उनके साथ ही रहना। अगर इसमें कुछ भी गल्ती हुई, तो मैं नहीं मानूँगा।" बूढ़े ने कहा।

बड़ा लड़का, उन नियमों को स्वीकार करके, अगले दिन सवेरे तीनों गौवों को लेकर निकला। ये दो पहाड़ पार कर एक घाटी में चरने लगीं।

वहाँ एक विचित्र घटना घटी। देखते देखते वहाँ आकाश में दो मुरगियाँ, बड़े लड़के के पास मंड़राईं। उनमें एक सुनहले रंग का मुरगा था और दूसरी श्री चान्दी के रंग की मुरगी। उन दोनों को देख बड़ा लड़का ललचाया। वह चरती गौवों को छोड़कर उनके पीछे भागा। सोने के मुरगे की पूँछ के रंग-बिरंगे पंख चम-चमा रहे थे। बड़े लड़के का उन पर हाथ लगना था कि वे अदृश्य हो गये।

"यह सब कोई जादू-सा लगता है। बूढ़े की बात न सुनकर, इन जादू की मुरगियों के पीछे व्यर्थ गया।" सोचता वह गौवों के पास गया।

तब एक और अजीब बात हुई। उसके सामने एक सोने का अंडा और एक चान्दी का अंडा, उड़ रहे थे। उसने सोचा कि शायद उसे भ्रम हो रहा था, उसने आँखें मलकर देखा। कोई भ्रम न था। सचमुच एक सोने का अंडा और एक चान्दी का अंडा था। फिर वह ललचाया। वह गौवें भूल गया। "यदि मैं इन दोनों अंडों को पा गया, तो मेरी गरीबी हमेशा के लिए खतम हो जायेगी।" सोचकर वह उनके पीछे भागा। पर वह अभी दस अंगुल ही गया था कि वे भी मुरगियों की तरह अदृश्य हो गये।

दूसरी बार धोखा खाकर वह गौवों के पास आया। वह चरती-चरती घाटी के अन्त तक आ गई थीं। वहाँ उसे एक अद्‌भुत दृश्य दिखाई दिया। वहाँ कुछ फल के पेड़ थे। उन पर पके फल थे। फलों के बोझ के कारण पेड़ों की टहनियाँ ज़मीन को छू रही थीं। उन फलों को देखकर उसके मुख में पानी आ गया। वह गौवें छोड़कर पेड़ों के पास गया। पेट-भर फल खाकर फिर वह गौवों के पास

एक और साल बीत गया। किसान के छोटे लड़के ने पिता से कहा—"बहिन को गये दो साल हो गये हैं। भाई को गये साल हो गया है। दोनों का कहीं पता नहीं है। मैं पता लगाकर उनको क्या साथ ले आऊँ?"

"इसमें क्या है? जाओ बेटा, देख आओ।" पिता ने कहा।

"रास्ते में खाने के लिए, माँ मुझे एक रोटी तो बनाकर दो।" छोटे लड़के ने कहा।

वह माँ की बनाई हुई रोटी लेकर निकल पड़ा। वह भी भोजन के समय तक जंगल पहुँचा। उसने भी अपने भाई की तरह पत्थर पर बैठकर रोटी निकाली। इतने में कौव्वे ने आकर—"का, का," किया।

"क्या, तुम्हें भूख लग रही है? माँ ने प्रेम से बनाकर रोटी दी है—थोड़ी-सी खा लूँगा, तो मेरा पेट-भर जायेगा।" कहते हुए छोटे लड़के ने रोटी के दो टुकड़े किये और एक टुकड़ा कौव्वे को दे दिया। वह टुकड़ा चोंच में रखकर चला गया। उस दिन शाम को छोटा लड़का, बूढ़े के घर पहुँचा। जैसा कि आया। तब तक वे चर-चराकर घर की ओर जा रही थीं। किसान का बड़ा लड़का भी उनके साथ गया।

बूढ़े ने कहा—"मैं इन तीन गौवों का दूध दुहकर बताऊँगा कि तुमने मेरे कहे अनुसार किया कि नहीं? उसने उनका दूध दुहा। दूध बड़ा पतला और बेस्वाद था।

"विश्वासघाती, यह देखो, मेरी बात न मानने का परिणाम।" उसने वह दूध उस पर उंड़ेल दिया। वह तुरत पत्थर बन गया।

उसने बड़े लड़के से पूछा था, बूढ़े ने छोटे लड़के से भी गौवें चराने के लिए कहा।

"मैं अपने भाई और बहिन को खोजने के लिए निकला हूँ और फिर तुम बहुत बूढ़े हो। तुम पहाड़ों पर चढ़ उतरकर, कैसे गौवों को चराओगे ? इसलिए कुछ दिन मैं तुम्हारी गौवें चराऊँगा।" छोटे लड़के ने कहा। बूढ़े ने छोटे लड़के को भी बताया कि कैसे गौवों को चराना था। उसने उसको आगाह किया कि वह उसके कहे के विरुद्ध न करे।

जब छोटा लड़का घाटी में तीनों गौवों को चरा रहा था सुनहरा मुरगा और चान्दी की मुरगी, कहीं से आकर पास में आकाश में मँडराई। उसने उन्हें देखा तो पर गौवों को छोड़कर, वह उनके पीछे न गया। फिर उसको सोने का डँडा और चान्दी का डँडा दिखाई दिया, पर उसने उनकी भी परवाह न की।

गौवें चरती-चरती फलों के पेड़ के पास आयीं। छोटे लड़के को उन फलों को देखकर, उन्हें खाने की इच्छा हुई। चूँकि बूढ़े ने उसे गौवों के साथ रहने के लिए कहा था, इसलिए फल तोड़कर, खाने का मौका भी न मिला—क्योंकि गौवें बिना रुके आगे चलती जा रही थीं। वह उनके पीछे चलता गया।
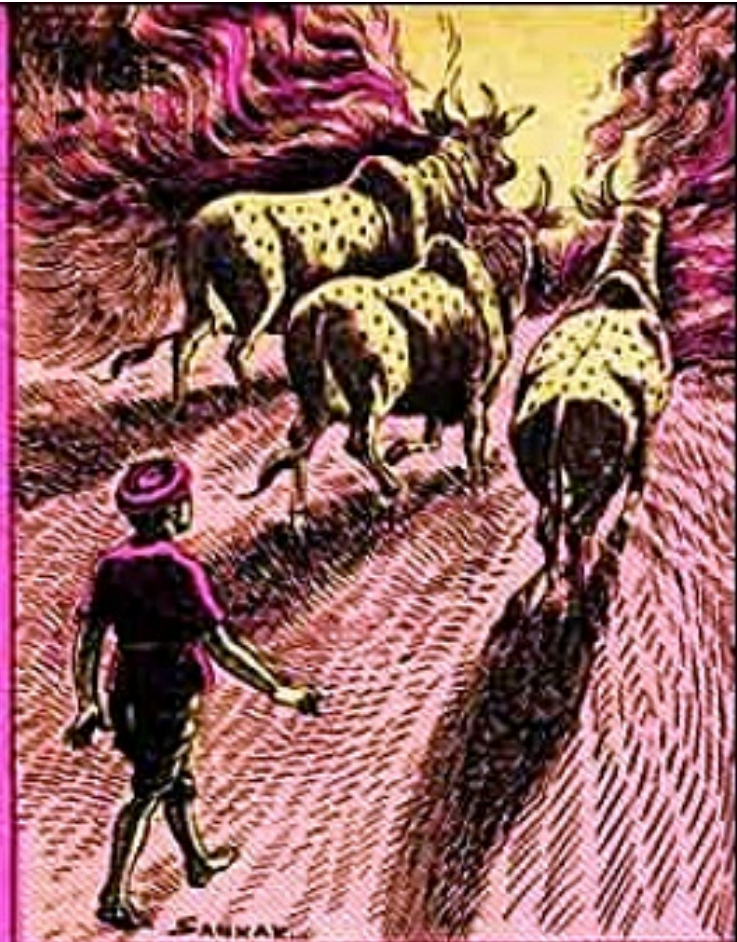
यकायक धुँआ-सा उमड़ आया। ऐसी गन्ध आई, जैसे कहीं पेड़ जल रहे हों। थोड़ी दूर जाने पर, एक मैदान में सब झाड़ियाँ जल रही थीं। आग की बिना परवाह किये—गौवें उसके बीच में से चलती जा रही थीं, छोटा लड़का भी उनके पीछे-पीछे चलता गया।

सौभाग्यवश उस आग से न गौवों का कुछ हुआ न उसका ही कुछ। उस

मैदान को पार करके गौवें एक नाले के पास पहुँचीं। उस नाले में बाढ़-सी आई हुई थी। तो भी गौवें निश्चिन्त हो, उसमें उतरीं और पार करने लगीं। छोटे लड़के को भी उनके पीछे-पीछे जाना पड़ा।

गौवें नाला पार करके नये रास्ते से घर पहुँचीं। छोटा लड़का भी उनके साथ घर पहुँचा। यह जानने के लिए कि उसने उसके कहे अनुसार गौवों को चराया था कि नहीं, बूढ़े ने गौवों को दुहा। दूध ठीक था और स्वादिष्ट भी।

"तुम अच्छे चरवाहे हो। जैसे मैंने कहा था, वैसा ही तुमने इन्हें चराया। यदि तुमने अपने भाई की तरह इन्हें चराया होता, तो तुम्हारी गति भी वही होती।" कहते हुए बूढ़े ने पथराये हुए किसान के लड़के को दिखाया।

"यह बूढ़ा कोई मान्त्रिक-सा मालूम होता है। बहिन का भी इसी ने कुछ किया होगा।" छोटे लड़के ने सोचा।

"क्योंकि मेरी गौवों को तुमने मेरे कहे अनुसार चराया है, इसलिए जो ईनाम तुम चाहो, माँगो।" बूढ़े ने कहा।

"मेरी एक ही इच्छा है। मेरे भाई को पुनर्जीवित कर दीजिये। अगर आप से यह सम्भव हो, तो हमारी बहिन हमें दिला दीजिये।" छोटे लड़के ने कहा। यह इच्छा सुन बूढ़ा असन्तुष्ट-सा हो गया। उसकी भौंहें सिकुड़ गईं। "अरे तुम्हारी इच्छा तो बहुत बड़ी है। यदि चाहते हो कि वह पूरी हो, तो तीन काम बताता हूँ। उन्हें करो।"

"कहिये।" छोटे लड़के ने कहा।

"वह जो ऊँचा पर्वत दिखाई दे रहा है, उस पर एक हरिणी है। उसकी बगल में दाग होंगे। उसके पैर सूये-से होंगे। उसके सींग विचित्र हैं। वह वायु की तरह भागती है। उसे पकड़कर लाना तुम्हारा पहिला काम है। उसके पास ही एक बहुत गहरी झील है। उसमें हरे पंखोंवाली बत्तख है। उसका गला हल्दी के रंग का होगा। उसको लाना दूसरा काम है। पहाड़ों के बीच में एक झरना है, उस झरने की तह में एक मछली है। उसका पेट सफेद है। पूँछ चान्दी की सी है। उस मछली को लाना तीसरा काम है।" बूढ़े ने कहा।

छोटा लड़का हरिणी के लिए पहाड़ पर चढ़ने लगा। पहाड़ की चोटी पर वह हरिणी, और उसके बड़े बड़े सींग दिखाई दिये। वह उसके लिए भागा। वह उसे न मिला। वह उससे दस गुना तेज भागकर पहाड़ों का चक्कर लगाने लगी।

"यदि मेरे साथ अच्छा-सा शिकारी कुत्ता होता, तो क्या अच्छा होता! उसका सोचना था कि उस समय एक शिकारी कुत्ता हरिणी की ओर गया और उसको गिरा दिया। छोटे लड़के ने हरिणी को पकड़ लिया, उसे कन्धे पर डाल वह झील की ओर गया। शिकारी कुत्ता कहीं चला गया। क्योंकि छोटे लड़के ने अपनी आधी रोटी दी थी, इसलिए कौव्वे ने उसकी सहायता के लिए उसे भेजा था।

जब छोटा लड़का झील के पास पहुँचा, तो हरी बत्तख आकाश में मँड़रा रही थी। वह सोच ही रहा था कि वह कैसे मिलेगी कि कौव्वा स्वयं वहाँ आया और बत्तख को पकड़कर छोटे लड़के के पैरों के पास डालकर अपने रास्ते चला गया।

इसी तरह उस मछली को पकड़ने के लिए कहीं से कोई जल-बिलाव आया और उसकी सहायता कर गया। इस तरह तीनों काम करके किसान के लड़के ने बूढ़े को सन्तुष्ट किया।

"बेटा, तुमने अपनी अच्छाई से सब कार्य सम्पन्न कर लिये। मैं तुम्हारे भाई को मामूली आदमी बना देता हूँ। तुम्हारी बहिन को मैं ही उठाकर लाया था। मैं उसे भी तुम्हें सौंप देता हूँ।" कहकर बूढ़े ने किसान के बड़े लड़के और लड़की को छोटे लड़के को सौंप दिया। छोटा लड़का उन दोनों को साथ घर ले गया। फिर वे सुख से रहने लगे।

असफल आत्महत्या

नानी ने कहा था—तुम्हें इस जन्म में बुद्धि न आयेगी। एक और जन्म लेना होगा। एक और जन्म लेने के लिए पहिले मरना होगा। इसलिए गोल मटोल भीम मौत की प्रतीक्षा करने लगा। पर वह यह न जानता था कि वह मौत कब और कैसे आयेगी।

एक दिन लकड़ी काटने के लिए उसने रास्ते के पास का एक पेड़ चुना। टहनी काटने के लिए उसे खड़ा होना था और खड़े होने के लिए वहाँ जगह न थी। इसलिए वह उस टहनी पर ही खड़ा होकर उसे काटने लगा।

उस समय रास्ते पर जाते एक बूढ़े ने गोल मटोल भीम को देखा। "अरे भाई, यह क्या कर रहे हो, नीचे गिर जाओगे!"

"तुम सोच रहे हो कि मैं पेड़ पर चढ़ना नहीं जानता हूँ! क्या मैं टहनी काटना नहीं जानता हूँ! तुम कैसे कह रहे हो कि मैं गिर जाऊँगा। जाओ।" वह बूढ़े पर झुँझलाया।

थोड़ी देर में टहनी टूटी, उसके साथ भीम भी गिरा, क्योंकि टहनी यकायक नहीं गिरी थी—धीमे-धीमे गिरी थी इसलिए भीम को कोई खास चोट नहीं लगी।

पर उसे बूढ़े पर भरोसा हो गया। वह बूढ़ा ज़रूर कोई ज्ञानी होगा। इसलिए जो होने जा रहा था उसने साफ़-साफ़ बता दिया था। गोल मटोल भीम भागा-भागा बूढ़े से मिलने गया। "मुझे माफ़ कीजिये। मैं यह न जानता था कि आप त्रिकाल वेत्ता हैं। इसलिए मैंने ऊटपटांग कुछ बक दिया, आपका अपमान किया। जैसा

आपने कहा था, वैसे मैं नीचे गिर गया।" उसने उसको साष्टांग नमस्कार किया।

"मैंने कोई विशेष बात नहीं कही थी जैसी जो बात थी, वैसी ही कही थी, उठो, उठो।" कहकर बूढ़ा गोल मटोल भीम को उठाने गया।

"आप सब कुछ जानते हैं। मैं आपके पैर तब तक न छोड़ूँगा, जब तक आप यह न बतायेंगे कि मैं कब मरने जा रहा हूँ।" गोल मटोल भीम ने कहा।

बूढ़ा जान गया कि वह बावला था। उसने उससे कहा—"जब तुम्हारी आयु खतम हो जायेगी, तब तुम मर जाओगे।"

"आयु कब खतम होगी?" गोल मटोल भीम ने फिर पूछा।

"जब तुम्हारे सिर के बाल सफेद हो जायेंगे, तब तुम्हारी आयु खतम हो जायेगी।" बूढ़े ने कहा।

"फिर सिर के बाल कब सफेद होंगे?" गोल मटोल भीम ने फिर पूछा।

उस बावले से पीछा छुड़ाने के लिए बूढ़े ने कहा—"अरे, यह भी कौन-सी बड़ी बात है? सवेरे उठकर दही के साथ चावल खाना, मगर हाथ न धोना, उसे सिर पर लगा लेना। तब तुम्हें तीन डकारें आयेंगी, तीसरी डकार के साथ तुम्हारे प्राण चले जायेंगे।" बूढ़े ने कहा।

गोल मटोल भीम यह सलाह सुन पूरी तरह सन्तुष्ट हुआ। उसने बूढ़े के पैर छोड़ दिये। काटी टहनी के और टुकड़े करके, गट्ठर बाँधकर, उन्हें घर ले गया। उसने नानी से कहा—"नानी, कल मुझे दही और चावल परोसना।" नानी खुश हुई कि खाने-पीने की चीज़ों का स्वाद तो कम से कम पोता समझने लगा था।

भीम बड़ा खुश हुआ कि अगले दिन वह मरने जा रहा था। मरने के बाद उसे गाड़ना नानी के लिए आसान न था। इसलिए वह गाँव के बाहर गया और अपने लिये बड़ा-सा गढ़ा खोद कर चला आया।

नानी ने उसको दही, चावल परोसे। उसने दही खा ली और झूटी अंगुलियाँ सिर पर पोंछ लीं। बालों पर दही लग गई। शीशे में देखने पर लगा कि उसके बाल कहीं कहीं सफेद हो गये थे।

"बाल सफेद हो गये हैं, अब यानि आयु खतम हो गई है।" गोल मटोल भीम ने कहा। इतने में डकार आई। "एक प्राण चला गया है, अब दो प्राण जाने हैं।" सोचता वह उस गढ़े के पास दौड़ा-दौड़ा गया। रास्ते में उसे दूसरी डकार आई, जब गढ़े के पास पहुँचा, तो तीसरी डकार भी आ गई।

"अब मैं पूरी तरह मर गया हूँ।" सोचकर भीम गढ़े में कूदा और अपने ऊपर मिट्टी डालने लगा। जब मिट्टी गले तक आ गई, तो वह हाथों से काम न कर सका। जब उसका सिर्फ सिर ही गढ़े में दिखाई दे रहा था, तो उस तरफ़ से एक कुत्ता आया। उसके सिर पर लगे दही की गन्ध पा, वह उसके पास आया और सिर पर लगी दही चाटकर चला गया।
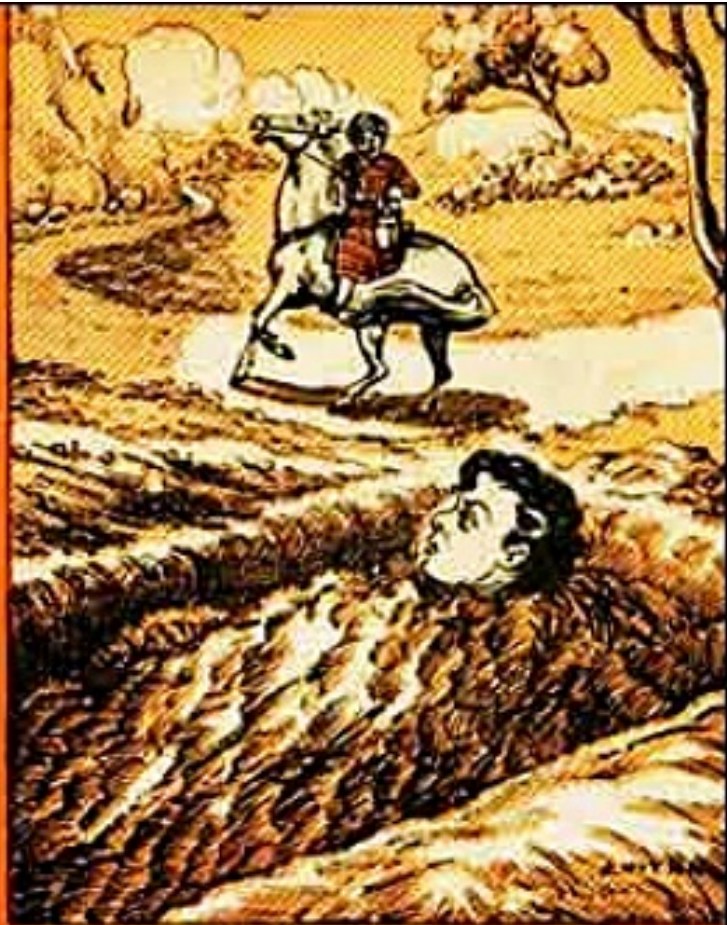
इतने में एक सेठ उस तरफ़ घोड़े पर सवार होकर आया। जब उसने भूमि पर केवल सिर देखा, तो उसे लगा कि वह किसी जीवित व्यक्ति का सिर न था। पर भीम ने उसे देखकर आँखों से ईशारा किया कि गढ़ा भर दे।

सेठ ने घोड़े पर से उतर कर पूछा— "क्या किया है तुमने? तुम्हें किसने सज़ा

दी है।" पर भीम मुख से कुछ न बोला। आँखों से ही ईशारा करता रहा। पर सेठ प्रश्न करता ही रहा।

आखिर भीम ने ऊबकर कहा—"अरे भाई, मैं मर गया हूँ। मुझे और न मारो, वह मिट्टी मुझ पर डाल दो। गड्ढा भर दो।"

"अरे मर गये हो, तो फिर बात कैसे कर रहे हो?" सेठ ने पूछा। वह ताड़ गया कि वह पगला था।

"मैंने कहा तो है कि मैं मर गया हूँ, पर तुम्हें समझ में न आये, तो मैं क्या कर सकता हूँ!" गोल मटोल भीम ने कहा।

"देखो भाई, मैं तुम्हें एक और जीवन देता हूँ—क्या तुम जानते हो कि यदि मनुष्य मर भी जाये, तो आत्मा नहीं मरती है।" सेठ ने कहा।

"नानी ने भी यही कहा था— स्वामी का भी यही कहना था। वे मरकर फिर जी उठे थे। मैं मरकर भी जीवित हूँ। पर मैं नानी के पास नहीं जाऊँगा। मुझे वह हमेशा पगला बताती है।"

"अच्छा, तो मेरे साथ आओ।" कहकर सेठ ने उसे गढ़े से ऊपर निकाला।

सेठ को काम करने के लिए आदमी चाहिए था। वह तेल खरीदने के लिए जा रहा था।

"यह पीपा लेकर मेरे पीछे पीछे आओ। तेल खरीद कर दूँगा। उसे घर ले आना। मैं तुम्हें चार आने मजदूरी दूँगा। उसके बाद घर में नौकरी दूँगा। मँजूर है?" सेठ ने भीम से पूछा।

भीम ने कहा कि मँजूर है। वह सेठ के साथ चला गया।

(अगले महीने एक और घटना)

काम करने पर भी मदद

एक पहाड़ के पास एक धनी ज़मीन्दार रहा करता था। उसकी पत्नी बड़ी कामकाजी थी। दिन-भर तो वह घर का काम करती ही रहती। वह आधी रात तक जगती भी और घर भर के लिए सूत कातती। वह स्वयं सूत ठीक करती और करघे पर कपड़ा बुनती।

इतना कुछ करती, इसलिए वह कभी कभी बुरी तरह थक जाती। तब भी वह जैसे-तैसे काम करती जाती, काम करना न छोड़ती।

एक दिन जब रात को सब सो गये थे, तो ज़मीन्दार की पत्नी चरखे के सामने बैठी-बैठी सूत कात रही थी। "जितना भी करो, यह काम कम नहीं होता है, कोई आकर मदद करे, तो कितना अच्छा हो।" उसने सोचा।

तुरत उसे ड्योढ़ी पर किसी का किवाड़ खटखटाना सुनाई दिया। ज़मीन्दारिनी चकित हो सोचने लगी कि कौन आया था। उसने जाकर किवाड़ खोले। कोई बौनी स्त्री जल्दी-जल्दी अन्दर आई। चरखे के सामने लेटकर, बड़ी तेज़ी से चरखा चलाने लगी।

जब ज़मीन्दारिनी किवाड़ बन्द करके अन्दर आने लगी, तो एक और बौनी स्त्री आई और सूत लपेटने लगी। इस तरह एक के बाद एक पांच बौनी स्त्रियाँ अन्दर आईं। हर कोई कुछ न कुछ काम करने लगी। पतले गले से वे ज़ोर ज़ोर से चीखती जाती थीं। एक ने सूत काता, दूसरे ने उसे लपेटा, तीसरे ने उस पर मांड लगाई। एक और करघा चलाने लगी, एक ने भट्टी में आग लगाकर उस पर एक हंडे में पानी रख दिया।

उनके शोर से सारा घर गूँज रहा था। ज़मीन्दारिनी घबरा गई कि यह शोर सुन, उसका पति जो एक कमरे में सो रहा था, उठेगा और चिल्लायेगा, झुँझलायेगा। पर वह इस तरह सो रहा था, जैसे किसी ने बेहोशी की दवा दे दी हो। वह न उठा। यह देख ज़मीन्दारिनी ने सोचा कि कहीं ये सब यक्षिणियाँ तो न थीं। लोग कहा करते थे कि ये पहाड़ों पर रहा करती थीं। पर उन्हें किसी ने देखा न था। क्योंकि यक्षों में कुछ असाधारण शक्तियाँ होती हैं, इसलिए लोग उनसे डरा करते थे।

ज़मीन्दारिनी अब डरने लगी। इतनी सारी यक्षिणियों में वह अकेली रह गई थी। उसने सोचा कि उनका शोर शराबा सुनकर, यदि सब उठकर आ गये तो? पर अब क्या किया जाय? परन्तु कोई भी न उठा। सब घोड़े बेचकर सो रहे थे।

इस बीच यक्षिणियों ने उसे यूँही न छोड़ा। किसी ने पानी माँगा। किसी ने कहा कि भूख लग रही थी—कुछ बनाने के लिए कहा। ज़मीन्दारिनी रसोई में जाकर भट्टी जलाकर, कुछ बनाने लगी। वह

बनाती जाती थी, वे खाती जाती थीं, पर उनकी भूख मिटती न लगती थी।

ज़मीन्दारिनी सोच ही रही थी कि उन यक्षिणियों से कैसे पीछा छुड़ाया जाय कि उसे पड़ोस की बुढ़िया याद हो आई। वह बुढ़िया यक्षों के बारे में बहुत कुछ जानती थी। आस पड़ोस के प्रदेश में उस अकेली ने ही यक्षों को देखा था।

रसोई करती-करती ज़मीन्दारिनी उठी और पिछवाड़े में से बुढ़िया के पास गई और जो कुछ हुआ था, उसे कह सुनाया।

"अरे पगली, उन यक्षिणियों का न आना ही भला, आ गईं, तो वे पीछा नहीं छोड़तीं। अनजाने ही तुमने उन्हें बुलाया। फिर कभी उनकी मदद न माँगना। मैं उन्हें भगाने का तरीका बताती हूँ, सुनो। घर के बाहर खड़े होकर चिल्लाओ कि पहाड़ जला जा रहा है। चिल्लाना सुन सब बाहर आ जायेंगी, तुम तुरत किवाड़ बन्द कर देना। वे जो जो चीज़ जहाँ जहाँ छोड़कर जायें, उन्हें या तो वहाँ से हटा देना, नहीं तो उलटकर रख देना।" बुढ़िया ने ज़मीन्दारिनी से कहा।

वह अपने घर आई—बाहर आकर चिल्लाने लगी—"आग आग, पहाड़ जला जा रहा है।" यह सुन बौनी स्त्रियाँ बाहर भागी-भागी आईं, क्योंकि उनके घर बार सब उसी पहाड़ पर थे।

इनके जाते ही ज़मीन्दारिनी ने किवाड़ बन्द कर दिये और अन्दर से चटखनी लगा दी। बुढ़िया के कहे अनुसार, उसने सब चीज़ें हटा दीं।

यह देखकर कि उनके घरबार नहीं जल रहे थे। फिर उन्होंने आकर किवाड़ खटखटाये। परन्तु ज़मीन्दारिनी ने किवाड़ न खोले, वे इतने से बाज़ न आये। "अरे, तकली किवाड़ खोलो।" "करघे दरवाज़ा खोलो।" उन्होंने हर चीज़ को पुकारा। एक चीज़ नहीं बोली। एक चीज़ न हिली।

एक यक्षिणी चिल्लाई—"भट्टी के नीचे की लकड़ी, दरवाज़ा खोलो।"

भट्टी की लकड़ी यकायक उठी और दरवाज़ा खोलने के लिए निकली। तुरत ज़मीन्दारिनी ने उस पर पानी उड़ेल दिया वह भुस भुस करती बुझ गई।

किवाड़ खटखटाने के बाद भी यक्षिणियाँ शोर करती जाती थीं। ज़मीन्दारिनी ने पति को उठाना चाहा, पर वह खुर्राटे मारकर सो रहा था। वह न उठा। उसने तब पति के मुँह पर ठंडा पानी छिड़का।

ज़मीन्दार झट उठा—"बाहर, यह शोर क्या है?" उसने किवाड़ खोलकर जो बाहर देखा, तो उनका शोर खतम हुआ। यक्षिणियाँ अपने घर चली गईं। फिर कोई उनके घर न आया। उन्हें किसी ने न देखा।

अपूर्व शक्तियाँ

एक ज़मीन्दार के एक लड़का था। उसका नाम विजय था। उसकी जन्म पत्री देखकर ज्योतिषियों ने कहा—"इसमें अपूर्व शक्तियाँ हैं। जहाँ कहीं ये जायेगा, इसे प्रतिष्ठा, कीर्ति वगैरह मिलेगी। यह खूब धन कमायेगा।"

यह सुन ज़मीन्दार खुश हुआ। उसने विजय को बड़े लाड़-प्यार से पाला-पोसा। उसे किसी बात की कमी न होने दी। ज्यों-ज्यों विजय बड़ा होता जाता था, त्यों त्यों पिता गौर से देखता जाता था कि उसमें कोई अपूर्व शक्ति है कि नहीं। पर उसमें कोई अपूर्व शक्ति न दिखाई दी। विजय साधारण लड़के के समान ही था। उसमें कोई असाधारण बुद्धिमत्ता भी न थी। अगर कभी अक़्लमन्द भी लगता, तो अगले क्षण ही वह निरा मूर्ख लगता।

ज़मीन्दार ने सोचा कि ज्योतिषियों ने उससे यूँही झूट कहा था।

इतने में एक घटना हुई। एक दिन विजय अपने घर के आँगन में आम के पेड़ के नीचे बैठा हुआ था। ऊपर की ओर देख रहा था और उसके मुख से कुछ निरर्थक बातें निकल रही थीं। पिता ने यह देखा।

"क्या यह पगला गया है?" सोचता हुआ, ज़मीन्दार उसके पास गया। उसके पेड़ के नीचे जाते ही कई पक्षी, पेड़ की टहनियों से तुरत उड़ गये।

"पिताजी! पक्षियों को आपने व्यर्थ उड़ा दिया!" विजय ने कहा।

"तुम यहाँ बैठे-बैठे कर क्या रहे हो?" पिता ने पूछा।

"इन पक्षियों से बातें कर रहा हूँ। वे जाने कहाँ-कहाँ की बातें मुझे आकर

सुनाते हैं। मैं कई ऐसी बातें सुन रहा हूँ, जो मैं नहीं जानता हूँ।" विजय ने कहा।

"यह कैसे हो सकता है बेटा! हम उनकी भाषा नहीं जानते हैं!" पिता ने कहा।

"मैं जानता हूँ, पिताजी! मैं उनसे बात भी कर सकता हूँ।" विजय ने कहा।

वह जो निरर्थक शब्द कर रहा था, शायद वह पक्षियों की ही भाषा थी। ज्योतिषियों ने जैसा कहा था, वैसे ही उनमें पक्षियों की भाषा समझने की शक्ति थी—यह ज़मीन्दार जान गया। विजय कामकाजी होगा, यह बात भी होकर रहेगी। यह सोचकर ज़मीन्दार बड़ा खुश हुआ।

कुछ दिन बीत गये। एक दिन जब कि ज़मीन्दार भोजन कर रहा था, तो विजय उसके पीछे खड़े होकर पंखा करने लगा। बाहर पालतू कबूतर "गुटर गू, गुटर गू" कर रहे थे।

ज़मीन्दार ने खिड़की में से बाहर कबूतरों को मँडराता देख कहा—"बेटा, तुमने कहा था कि तुम पक्षियों की बात जानते हो। यह बताओ कि ये कबूतर क्या बातें कर रहे हैं। देखें। वे हर रोज इतना शोर तो नहीं करते हैं।"

विजय ने हिचकते हुए कहा—"जी नहीं। वे जो बातें कर रहे हैं, मुझे ही पसन्द नहीं हैं। अगर आप सुनेंगे, तो आप नाराज़ होंगे।"

उसके यह कहने पर ज़मीन्दार की यह जानने की इच्छा कि कबूतर क्या कह रहे थे और उग्र हो उठी। उसने विजय को तब तक न छोड़ा, जब तक उसने बता न दिया।

"आपके भोजन करते समय, मैं जिस तरह पंखा झल रहा हूँ, उसी तरह आप

भी मेरे भोजन करते समय मुझ पर पंखा करेंगे और वह दिन दूर नहीं है।" विजय ने कहा।

यह सुनते ही ज़मीन्दार बौखला उठा।

"मुझे तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं होता। कबूतर क्या ज्योतिषी हैं, जो भविष्य की बात कहें। तुम्हें ही शायद कोई बुरी बात सूझ रही है। मेरे जीते जी ही क्या मेरी ज़मीन्दारी लेकर मुझ से नौकरी करवाना चाहते हो! तुरत घर छोड़कर चले जाओ। मुझे फिर अपनी शक्ल न दिखाना।" ज़मीन्दार चिल्लाया।

विजय ने पिता से मीठे ढंग से कहकर देखा। "मैं आपको किसी भी तरह धोखा नहीं देना चाहता। जो बातें ये कबूतर कर रहे थे, वे ही मैंने बताई हैं। ये बातें उतनी बुरी मुझे भी लग रही हैं। इसलिए मैंने पहिले ही कहा था कि नहीं बताऊँगा।"

फिर भी ज़मीन्दार अपनी बात पर अड़ा रहा। उसने उसको गाँव से निकल जाने के लिए कहा।

सच कहा जाय तो विजय को घर छोड़कर जाने में कोई फ़िक्र न थी। पक्षियों की
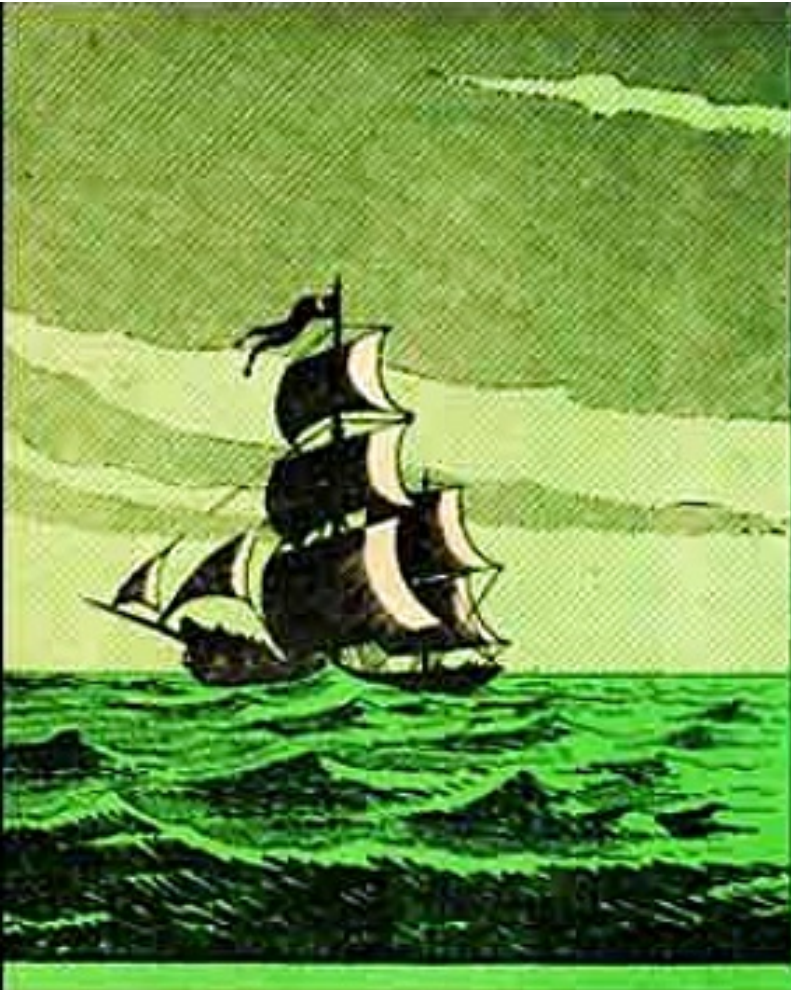
बातें सुनकर, वह संसार देखने के लिए उतावला हो रहा था। उसने उनसे संसार के कई आश्चर्यों के बारे में सुना था। उन्हें प्रत्यक्ष देखने का मौका उसे अब मिल रहा था।

ज़मीन्दार का ग्राम समुद्र के किनारे था। विजय ने समुद्र पार करके उस तरफ़ के प्रदेश को देखने की ठानी। सौभाग्यवश उसे समुद्र में जाता हुआ एक जहाज़ भी मिला। वह उसमें सवार हो यात्रा करने लगा।

वह जहाज़ विजय को सीधे सिंहल देश ले गया। जहाज़ से उतरकर, वह पैदल निकल पड़ा। जाते-जाते उसे फूलों का एक बगीचा मिला, उसके बाद ऊँचे-ऊँचे फल के पेड़ों का बाग, उसके बाद सोने से पुते दुमंजले मकान।

"यह अवश्य राज-महल है।" सोचता सोचता विजय, फूल के बगीचे में से, फलों के बाग में गया। उसे कोई आवाज़ सुनाई दी। ऐसा लगा कि कोई पेड़ काट रहा था। इसके साथ उसे एक और ध्वनि भी सुनाई दी। राजमहल के परली तरफ़ आकाश में कई लाख चिड़ियायें शोर करती उड़ रही थीं। जैसे-जैसे वह राजमहल के पास आता जाता था, वैसे वैसे उनका शोर भी बढ़ता जाता था। विजय कानों में अंगुली देकर आगे बढ़ने लगा।

राजा के एक नौकर ने विजय को देखकर कहा—"वाह, आपने अभी से कान में अंगुली रख ली। हम तो दिन रात यह शोर सुनते सुनते ही मर रहे हैं। बाहर जितनी चिड़ियायें है, उतनी ही अन्दर हैं। उनसे कैसे पीछा छुड़ाया जाये, हमारे राजा चौबीस घंटे माथापची कर रहे हैं।

विजय को ऐसा प्रतीत हुआ कि वह उन चिड़ियों से पीछा छुड़ा सकता था। उसने राजा के नौकर से कहा—"क्या तुम मुझे एक बार अपने राजा के पास ले जाओगे?"

नौकर विजय को राजमहल में ले गया। अन्दर हज़ारों चिड़ियायें पंख फड़-फड़ाती शोर कर रही थीं।

राजा अकेला एक कमरे में बैठा था। कहीं चिड़ियायें अन्दर न आ जायें, इसलिए सब खिड़कियाँ बन्द कर रखी थीं। दरवाज़े भी बन्द थे और वहाँ एक आदमी पहरे पर था। विजय के लिए जैसे ही दरवाज़ा खोला गया वैसे ही उसके साथ अन्दर एक चिड़िया भी चली गई।

विजय ने राजा से कहा—"महाराज, मैं देख रहा हूँ कि आप इन चिड़ियों के कारण कितने तंग हैं। अगर इनसे कोई आपका पीछा छुड़वा सकता है तो मैं ही छुड़वा सकता हूँ।"

यह सुनते ही राजा का मुँह खिल-सा गया। "यदि तुमने मेरा उपकार किया तो तुम्हारा ऋण न रखूँगा। हम जब तक जीवित रहेंगे, तब तक तुम्हारे कृतज्ञ रहेंगे।

पर जो काम कोई न कर सका, वह तुम कैसे कर सकोगे?" राजा ने पूछा।

"महाराज, अगर चिड़ियायें शोर कर रही हैं, तो अवश्य कोई कारण होगा। वे न मालूम क्यों आप से यों बदला ले रही हैं। मैं पक्षियों की भाषा जानता हूँ। उनके गुस्से के कारण उनसे ही मालूम कर लूँगा। तब उनको शान्त करने की आवश्यक व्यवस्था आप कर सकते हैं।" कहकर विजय ने साथ आये हुए चिड़िया से कुछ कहा, फिर राजा की ओर मुड़कर कहा—"यह कोई बड़ी समस्या नहीं है। सुना है आपने बाग में पेड़ कटवाने की आज्ञा दी है। इन पक्षियों के घर घोसले उन पेड़ों पर हैं, इसलिए ही वे क्रुद्ध हैं। आप पेड़ कटवाना छोड़ दीजिये, वे भी हल्ला करना छोड़ देंगी।"

राजा ने पेड़ कटवाना बन्द कर दिया। पक्षियों ने उसे तंग करना छोड़ दिया। राजा ने विजय को एक बड़ा जहाज़, बहुत-सा सोना, नौकर आदि दिये। उस जहाज़ में यात्रा करता करता, विजय बहुत से राजाओं के पास गया। क्योंकि पक्षियों के द्वारा, वह ऐसी बहुत-सी बातें जान

लेता था जो और न जान पाते थे इसलिए सब जगह उसका आदर हुआ।

इस तरह दस वर्ष देश विदेश घूमकर विजय ने इतनी धन-राशि जमा कर ली, जितनी कोई व्यापारी न कर पाया था। आखिर उसे घर जाने की इच्छा हुई। वह अपने जहाज़ में स्वदेश गया, अपने ग्राम के समीप ही उसने लँगर डाला।

ज़मीन्दार को पता लगा कि किसी धनी व्यापारी ने पास में ही लँगर डाला था। उसे न मालूम था कि वह उसका लड़का ही था। वह उस बड़े व्यापारी को भोजन के लिए स्वयं निमन्त्रित करने गया। उसके बन्धु-बान्धव सब दावत में बैठे थे। उतनी छोटी उम्र में ही इतना धन, इतना ज्ञान, इतना अनुभव, क्योंकि उसने पा लिया था इसलिए ज़मीन्दार को अपने अतिथि के प्रति बड़ा आदर था। वह पंखा लेकर अतिथि के पीछे पंखा करने लगा।

यह देख विजय ने अट्टहास किया। ज़मीन्दार ने चकित हो उससे पूछा—"क्यों हँस रहे हो!"

"पिताजी, आपने मुझे पहिचाना नहीं! देखा आपने उस दिन की कबूतरों की बात किस तरह सच साबित हुई! मैं विजय हूँ।"

ज़मीन्दार यह देख बड़ा खुश हुआ कि उसका लड़का इतना बड़ा हो गया था और फिर उसके पास वापिस आ गया था। वह उसको गले लगाकर खुशी के आँसू बहाने लगा। विजय को वापिस आया देख उसके सम्बन्धी खुश हुए। विजय विवाह करके पिता के घर ही सुख से रहने लगा।

अयोध्या काण्ड

भरत को उसके मामा आकर ले गये। बिना शत्रुघ्न के वह कोई भी आनन्द न उठा सकता था, इसलिए वह साथ शत्रुघ्न को भी ले गया। भरत के मामा के घर बिना किसी कमी के उनके दिन कट रहे थे। परन्तु उनको कभी कभी यह मन में चौधता कि वे अपने बूढ़े पिता को छोड़कर चले आये थे।

अयोध्या में महाराजा दशरथ को भी यही चिन्ता थी कि उसके दो लड़के दूर चले गये थे। पर सच कहा जाये तो उसके प्राण रामचन्द्र पर ही थे। ऐसा कोई सद्‌गुण न था जो उनमें न हो, प्रजा को भी राम के प्रति अभिमान था।

"मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ। मेरा मन यह देखने के लिए उतावला हो रहा है कि राम गद्दी पर कब बैठता है।" दशरथ सोच रहा था।

मन्त्रियों से जब मन्त्रणा की तो उन्होंने भी यही परामर्श दिया। अब यह देखना था कि इस विषय में प्रजा की क्या राय थी और अन्य राजाओं का क्या रुख था। इसलिए दशरथ ने सब राजाओं के पास खबर भिजवाई, क्योंकि ये दोनों बहुत दूर थे, इसलिए दशरथ ने कैकेई के पिता, केकेय महाराजा और सीता के पिता, महाराजा जनक को निमन्त्रण न भेजकर यथा समय शुभवार्ता पहुँचाने का निश्चय किया।

निमन्त्रण पाकर सब राजा आये और दशरथ के दरबार में यथोचित आसनों पर आसीन हो गये। नगर के सभ्य और ग्रामवासी भी राजसभा में आये। दशरथ ने उनसे कहा कि किस श्रद्धापूर्वक उसने राज्य किया था। "अब मैं वृद्ध हो गया हूँ। अब मुझे विश्राम की आवश्यकता है। यदि आप सब की सम्मति हो, तो मैं अपने बड़े लड़के राम का पट्टाभिषेक करना चाहता हूँ। राम पराक्रमी है। वह किसी भी बात में मुझ से कम नहीं है। वह तीनों लोकों का प्रभु होने योग्य है। मेरा विश्वास है कि उसका पट्टाभिषेक करने में ही राज्य का कल्याण है। यदि आपको मेरा निश्चय पसन्द है, तो आप अपनी अनुमति दीजिये। यदि आपको यह पसन्द नहीं है, तो जो आप उचित मार्ग समझें उसे सुझाइये।" दशरथ ने कहा।

यह सुन सभा में सब बड़े सन्तुष्ट हुए। राम के पट्टाभिषेक का एक कंठ से सब ने समर्थन किया।

"महाराज, राम का पट्टाभिषेक और उत्सव जल्दी ही करवाइये।" उन्होंने कहा।

दशरथ ने यह दिखाया जैसे कुछ जानता ही न हो। "मैंने तो अभी राम के पट्टाभिषेक का प्रस्ताव भी न रखा था कि आप सब समर्थन करने लगे। क्या कारण है इसका? क्या आपको मेरा शासन पसन्द नहीं है? मैं इतने न्यायपूर्ण ढंग से शासन कर रहा हूँ, फिर आप क्यों चाहते हैं कि राम राजा बने और कुछ नहीं मैं सिर्फ यह जानना चाहता हूँ।"

यह कहते ही, दशरथ जो सुनना चाहते थे, वही हुआ। सभासदों ने राम की भूरि भूरि प्रशंसा की। यदि उसको

राजा बना दिया गया, तो उससे अधिक महत्वपूर्ण बात कोई और न होगी। उन्होंने कहा।

उनकी बातें सुनकर दशरथ ने कहा—"मुझे यह देख बड़ा सन्तोष हो रहा है कि आप भी मेरी तरह सोच रहे हैं। फिर उन्होंने अपने पुरोहित, वशिष्ट, वामदेव आदियों को बुलवाया।" "महामुनियो, इस चैत्र मास में शुभकार्य किये जा सकते हैं। इसलिए राम के पट्टाभिषेक का प्रयत्न शुरु कीजिये। उसके लिए आवश्यक सामग्री मंगवाइये।" वशिष्ट ने तुरत नौकरों से कह दिया किन किन वस्तुओं की आवश्यकता थी। जल्दी ही पट्टाभिषेक के लिए आवश्यक वस्तुयें एकत्रित कर दी गईं।

दशरथ ने अपने सारथी सुमन्त्र से राम को अपने पास बुलवाया। सुमन्त्र जाकर राम को रथ में लाया। दशरथ ने राम से कहा—"बेटा, हम तुम्हारा राज्याभिषेक करेंगे, धर्म का पालन करते हुए अच्छी तरह राज्य करो।" यह कह दशरथ ने राम को भेज दिया। इसके बाद दूर देश से आये हुए राजा और लोग चले गये। राम के कुछ मित्रों ने तुरत यह खबर कौशल्या को दी। कौशल्या ने खुशी में उनको सोना, हीरे, मोती वगैरह उपहार में दिये।

सब के चले जाने के बाद दशरथ ने अपने मन्त्रियों से सलाह मशवरा किया। "कल पुण्यमी नक्षत्र है। पट्टाभिषेक के लिए बहुत अच्छा है। इसलिए कल ही इसे सम्पन्न किया जाये।" यह निश्चय करके राम को बुलाने के लिए उसने सारथी भेजा।

सारथी के कहने पर कि पिताजी बुला रहे हैं, राम ने पूछा—"मैं अभी यहीं

से तो आ रहा हूँ। फिर क्यों बुला रहे हैं ?"

"महाराजा आपको देखना चाहते हैं। आना चाहें, तो आइये, नहीं तो आपकी मर्जी।" सारथी ने कहा।

राम सारथी के साथ निकल पड़े। क्योंकि और कोई न था, इसलिए सिर नवाते राम को उठाकर उन्होंने गले लगा लिया, उन्नत आसन पर बिठाकर कहा—"बेटा, मैं बूढ़ा तो हो ही गया हूँ और ज्योतिषियों का यह भी कहना है कि मेरा बुरा समय आ रहा है। खराब सपने आ रहे हैं। इसलिए जब मेरे शरीर में प्राण हैं, तभी गद्दी सम्भाल लो। आज पुष्यमी है। कल पुनर्वसु है। शुभ कार्य के लिए यह बहुत अच्छा है। आज रात तुम और पत्नी दूब के घास पर सोओ और उपवास करो। मुझे ऐसा लगता है कि तुम्हारे भाई भरत के ननिहाल से लौटने से पहिले ही यह काम हो जाये, उसको भी बड़ों के प्रति भक्ति है, फिर भी मनुष्य का स्वभाव बड़ा चंचल होता है।"

राम पिता की अनुमति पर वहाँ से जब अपनी माता के महल में गया तो कौशल्या चुपचाप राज्यलक्ष्मी की प्रार्थना कर रही थीं। राम के आने से पहिले ही सुमित्रा को पट्टाभिषेक की वार्ता मिल गई थी, इसलिए सुमित्रा, लक्ष्मण, और सीता को लेकर कौशल्या के महल में आ गई थीं।

राम ने माँ को नमस्कार करके पट्टाभिषेक की बात कही—"माँ, बताओ, कल के पट्टाभिषेक में मुझे और सीता को क्या क्या करना है, यह बताओ और करवाओ।"

राम ने लक्ष्मण से कहा—"लक्ष्मण, तुम भी मेरे साथ सारी भूमि का परिपालन

करना। हम दोनों एक ही हैं, यदि मैं राजा हूँ तो तुम भी राजा हो। हम दोनों समस्त सुखों का उपभोग एक साथ करेंगे।"

उसके बाद माताओं की अनुमति पाकर सीता के साथ वे अपने महल में चले गये।

उस दिन रात को सीता और राम से दशरथ की इच्छा पर उपवास का अनुष्ठान करके, वशिष्ठ जब रथ में सवार होकर जा रहे थे, तो उनको गलियों में झुन्ड के झुन्ड दिखाई दिये। कल के उत्सव के लिए वे खुशियाँ मना रहे थे। सड़कों पर पानी छिड़का गया था। तोरण सजाये जा रहे थे, हर घर पर झंडा फहरा रहा था। स्त्रियाँ, बच्चे, और बूढ़े तभी से पट्टाभिषेक की इन्तज़ार कर रहे थे।

वशिष्ठ के चले जाने के बाद, राम ने स्नान किया, सीता के साथ हवन किया। निश्चल मन से नारायण के मन्दिर में भगवान का ध्यान करके वहीं वे एक प्रहर सो रहे। सवेरे प्रभात गायकों ने आकर उनको उठाया। संध्या आदि के पूरा करते करते सवेरा हो गया। ब्राह्मणों ने आकर पुण्य वाचन किया। मंगल वाद्यों से सारा अयोध्या गूंज उठा।

सवेरा होते ही लोगों ने अपने घरों को अलंकृत किया, घर के सामने पानी छिड़ककर फूल बिखेरे। सुगन्धित द्रव्य जलाये गये। लोग खड़े खड़े पट्टाभिषेक के बारे में ही बातें कर रहे थे। बच्चे घरों के सामने खेलते खेलते कह रहे थे "मैं भी आज पट्टाभिषेक देखने अपने माता पिता के साथ जाऊँगा।" खेलने वाले खेल रहे थे और गाने वाले गा रहे थे।

पर उस दिन एक और नाटक भी शुरु हुआ। कैकेयी के पास एक कुबड़ी दासी थी, नाम था मन्थरा। मन्थरा कैकेयी के महल में गई, वहाँ से उसने अयोध्या में होते उत्सव देखे। उसे आश्चर्य हुआ। बगल में सफेद साड़ी पहिने एक दासी को देख उसने पूछा—"यह सब क्या हो रहा है! कौशल्या ने क्या कोई व्रत किया है, जो लोगों को यों दान दे रही है। या दशरथ कोई उत्सव करने की सोच रहे हैं!"

दासी खिल खिलाकर हँसी। फिर उसने कहा:—"सवेरा होते ही, राजा राम का पट्टाभिषेक करने जा रहे हैं।"

कुबड़ी मन्थरा के लिए यह खबर कड़वी लगी। वह महल की छत से उतर आई। कैकेयी के शयनकक्ष में जाकर उसे उठाया "उठो उठो, आपका घर जला जा रहा है, आप तो फूली न समाती थी कि राजा को जितना आप पर प्रेम है उतना किसी पर नहीं है, अब और फूला समाना।"

"तुम्हें देखकर लगता है, जैसे कुछ हो गया हो। सब ठीक है न?" कैकेयी ने पूछा।

"कल दशरथ, राम का पट्टाभिषेक करने जा रहे हैं और क्या होगा! यह सुनते मेरा कलेजा खिसक गया। क्योंकि मैं आपका हित चाहती हूँ, इसलिए यह सुनते ही आपके यहाँ भागी भागी आयी हूँ।" मन्थरा ने कहा।

"सचमुच मन्थरा! कितनी अच्छी खबर लायी हो।" कहते कहते कैकेयी का मुँह खिल सा उठा। बिस्तरे पर से उठी। एक अपना गहना उतारकर उसे देते हुए कहा—"यदि और भी कुछ चाहोगी, तो दे दूँगी।"

मन्थरा को कैकेयी का यह रुख बिल्कुल पसन्द न आया। उसने अपनी मालकिन से कहा—"आप पर जो आपत्ति आनेवाली है, उसे आप नहीं समझ रही हैं। नहीं तो दुःखी होने के बदले आप यों खुशी होतीं! आपके बदले मैं ही रोऊँगी। पूछिये क्यों? कल राम का पट्टाभिषेक होते ही, कौशल्या राजमाता बन जायेंगी। आप उनकी परिचारिका बनेंगी। राम के अन्तःपुर की स्त्रियों की दासियाँ बनेंगी, आपकी बहुयें भरत और उसकी सन्तान का नामों निशान न रहेगा। कहा था कि मुझे ईनाम देंगी। ईनाम तो तभी मैं लूँगी, जब भरत का राज्याभिषेक होगा। भरत मामा के घर हैं, नहीं तो क्या राजा आप पर प्रेम के कारण, उसका पट्टाभिषेक न करते!

राम के राजा होने के बाद, भरत के यहाँ आने की आवश्यकता ही नहीं. वहाँ से वे सीधे जंगल जा सकते हैं। क्योंकि राम उनको जीने न देंगे। आपने इस अभिमान में कि आपके पति आपको अधिक चाहते हैं, कौशल्या की परवाह न की। क्या अब वे आपसे बदला न लेंगी। यदि आप में दम है तो भरत का पट्टाभिषेक करवाइये। भरत के प्रतिस्पर्धी राम को वन में भिजवाइये। इतने बड़े राज्य का राजा भरत होगा। आप राजमाता का आदर पायेंगी। राम यदि राजा हुए तो आपका पतन अवश्य है। तब आपका मुँह देखने वाला कोई नहीं होगा।

ये बातें कैकेयी को जंची। उसका मुख सकुचाया। क्रुद्ध हो मन्थरा को देखा। कहा—"हाँ, भरत ही राजा होना चाहिए। राम को वन जाना ही होगा। पर यह कैसे सम्भव है?"

जगन्नाथ का मन्दिर, पूरी

पूरी उरीसा प्रान्त में, पूर्व की ओर समुद्र तट पर है। यहाँ प्रसिद्ध जगनाथ का मन्दिर है। इसे १२ शताब्दी में बनाया गया था। उसकी ऊँचाई १९२ फीट है। इसके शिविर पर विष्णु चक्र और झंड़ा है। मन्दिर के पूर्वी द्वार के सामने एक अत्यन्त सुन्दर संगमरमर का स्तम्भ है। महाराजा रणजीतसिंह ने, कहा जाता था कि प्रतीज्ञा की थी कि प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा जगनाथ के मन्दिर को देगा। उनके उत्तराधिकारी ने यह प्रतीज्ञा पूरी न की। प्रति वर्ष आषाढ़ शुद्ध दशमी के दिन मन्दिर में उत्सव होता है। उस दिन जगनाथ की मूर्ति को एक बड़े रथ पर रखकर जलूस निकाला जाता है। यह बहुत बड़ा रथ है। इसकी ऊँचाई ४५ फीट है, रथ मंच ही २५ वर्ग फीट होता है। इस रथ के १६ चक्र होते हैं। एक एक चक्र का व्यास ७ फीट है। इस रथ को भक्त ही खींचते हैं।

१. प्रयागदास मोहता, श्री दीपचन्द्र मोहता, चक्रधरपुर

'चन्दामामा' को इतनी ख्याति-प्राप्ति कैसे हुई?

आप पाठकों की कृपा से।

२. सोहनसिंह सलेजा, यॉगात्र

क्या आपके यहाँ से "चन्दामामा" के अतिरिक्त और भी कोई किताब छपती है।

पत्रिका तो नहीं। "चन्दामामा" में प्रकाशित धारावाहिक पुस्तकाकार में अवश्य प्रकाशित हुए हैं।

३. विनोदकुमार सूद, आगरा

बेताल कथाओं में हमेशा आप शुरु के तीन या चार वाक्य एक-सा ही क्यों लिखते हैं?

यह बेताल की कहानियों का विशेष प्रारम्भ है।

४. अतुलकुमार वाजपेयी, कानपुर

क्या आप "चन्दामामा" में एक "पत्र-मित्र" स्तम्भ निकाल सकते हैं?

भाई, अभी तो नहीं, फिर कभी देखा जायेगा।

५. केशवचरण, चितरंजन

उड़िया का "चन्दामामा" क्यों बन्द हो गया है?

खपत कम थी।

६. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, मुरादाबाद

क्या आप "बालकाण्ड" के उपरान्त कृष्ण की बाल लीलाओं को भी छापेंगे?

अभी तो रामायण प्रकाशित कर रहे हैं, बाद में देखा जायेगा।

७. सुरेशकुमार मारिया, नागपुर

क्या "चन्दामामा" में फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता के प्रेषक को दस रुपये नगद या दस रुपये का पुरस्कार मिलता है।

नगद, मनीऑर्डर द्वारा भेजा जाता है।

८. तिलकराय दौड़ा, मुकेरियाँ

क्या आप "चन्दामामा" के दीवाली अंक की तरह रामलीला अंक भी छाप सकते हैं?

अभी तो नहीं।

९. ओम्प्रकाश वीराना, अम्बाल केन्ट्र

"चन्दामामा" को आजीवन प्राप्त करने की चन्दे की दर क्या है?

बड़ा उलझा हुआ हिसाब है। इस उलझन में न पड़िये। साल भर के लिए फिलहाल काफी है।

१०. प्रकाश सेंगर, रांची

"भयंकर घाटी" के बाद आप कौन-सा धारावाहिक उपन्यास प्रकाशित करेंगे?

अभी इसे खतम तो होने दीजिये।

११. सुरेश, दिल्ली

"चन्दामामा" के प्रकाशन के अतिरिक्त आप बच्चों के लिए और भी क्या कुछ करते हैं?

अभी तो नहीं। मगर कभी करेंगे।

Photo by Pranlal K. Patel
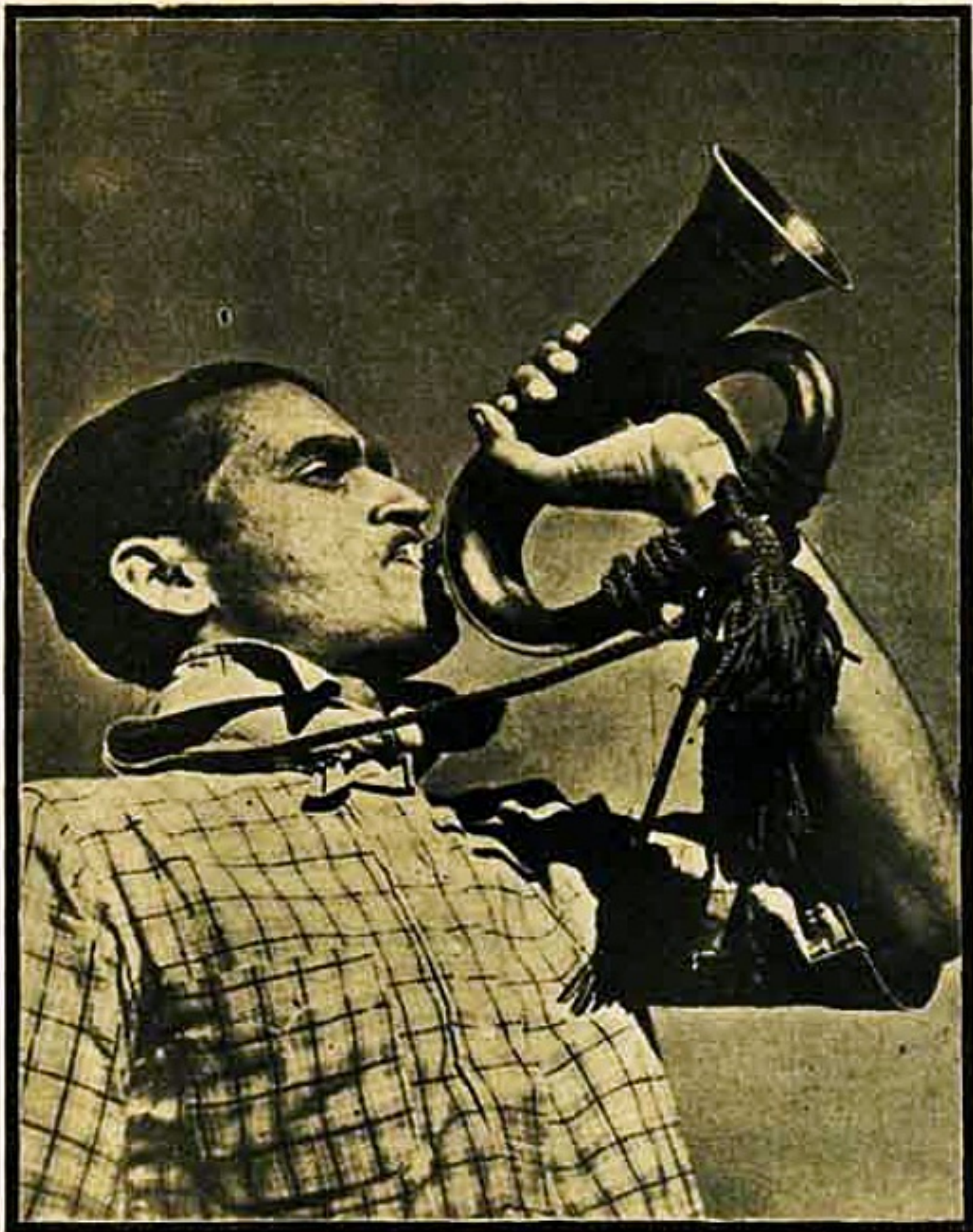
पुरस्कृत परिचयोक्ति

बिगुल तो भर रहा वही निनाद !

प्रेषक : रामरतन - आसनसोल

Photo by A. L. Syed

पुरस्कृत परिचयोक्ति

पर युग नहीं तलवार का आज !!

प्रेषक : रामरतन - आसनसोल

अन्तिम पृष्ठ

भीम और दुर्योधन का गदा युद्ध सरस्वती नदी के किनारे हुआ था। बलराम, धर्मराज, अर्जुन, नकुल, सहदेव आदि अन्य राजाओं ने उनके चारों ओर घेरा बनाकर युद्ध देखा। गदा युद्ध के पहिले वाग्युद्ध हुआ था। फिर भीम और दुर्योधन ने एक दूसरे को ज़ोर से गदा से मारा। एक ने दूसरे को गिराया। जब भीम गिर गया तो और पाण्डव भयभीत हो उठे। जब दुर्योधन गिरा तो खुशी से उन्होंने शंख बजाये। दोनों ही समान रूप से लड़े।

वे जब यों युद्ध कर रहे थे तो अर्जुन ने कृष्ण से पूछा—"इन दोनों में कौन अधिक बलवान है?" कृष्ण ने जवाब दिया—"भीम का बल अधिक है। दुर्योधन को गदा युद्ध का ज्ञान अधिक है। न्याय युद्ध करनेवाला भीम दुर्योधन को कभी न मार सकेगा। धोखे से ही उसे मारना होगा। भीम ने प्रतिज्ञा कर रखी है न कि वह दुर्योधन की जाँघ तोड़ देगा। यद्यपि यह अनुचित है, पर भीम को यह कार्य करना ही चाहिये। नहीं तो युद्ध में जो तुम लोगों ने विजय पायी है, वह व्यर्थ जायेगी।

अर्जुन ने यह बात सुनकर, जब भीम उसकी ओर देख रहा था, अपनी जाँघ रगड़ी। भीम वह संकेत समझ गया। मौका देख भीम ने अपनी लोहे की गदा से दुर्योधन की जाँघ पर प्रहार किया। दुर्योधन की जाँघ फट गई और वह गिर गया। भीम ने दुर्योधन के सिर पर लात मारकर कहा—"उस दिन द्रौपदी को देखकर तुम हँसे थे। आज चखो मजा उसका।"

भीम का दुर्योधन के सिर पर लात मारना कई को अनुचित लगा। युधिष्ठिर ने उससे कहा—"अब तुमने बदला ले ही लिया है, जाने दो। हमें इस हालत में इसे देखकर शोक करना चाहिये। इसमें हँसने की क्या बात है!" कहकर उसने दुर्योधन से कहा—"भाई हम पर क्रुद्ध न होओ। तुम स्वनिन्दा भी न करो। हमारा इस प्रकार परस्पर वैर होना विधि लिखित ही था। सब को खोकर हम भी हीन स्थिति में हैं। बस हमारे भाग्य में धृतराष्ट्र की बहुओं की गालियाँ सुनना ही रह गया है।"

भीम के काम पर बलराम क्रुद्ध हो उठा। "छी छी, यह मूर्ख युद्ध शास्त्र नहीं जानता इसने दुर्योधन की नाभी के नीचे प्रहार किया।" कहते कहते उसने अपना हल लेकर भीम पर आक्रमण किया। कृष्ण ने उसे रोका—"भाई, भीम ने बहुत पहिले प्रतिज्ञा की थी कि वह दुर्योधन की जाँघें तोड़ देगा। आज उसने अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर ली। गुस्सा न करो।" कृष्ण ने कहा।

बलराम उस युक्ति से सन्तुष्ट न हुआ। वह तभी रथ में सवार होकर द्वारका चला गया। परन्तु कई ने भीम के कार्य की प्रशंसा की। कई आनन्दित हुए।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

फरवरी १९६२ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर ता. * दिसम्बर '६१ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता,
चन्दामामा प्रकाशन,
वडपलनी, मद्रास-२६

दिसम्बर - प्रतियोगिता - फल

दिसम्बर के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो: बिगुल तो भर रहा यही निनाद!

दूसरा फ़ोटो: पर युग नहीं तलवार का आज!!

प्रेषक: रामरतन,

C/o श्री हरिराम साह, तालपोखरिया, जी. टी. रोड, पो: आसनसोल, जि: वर्दवान

चित्र-कथा

एक दिन दास और वास ने देखा कि एक शरारती लड़का तालाब में मछलियाँ पकड़ रहा था। उसके पास टोकरा देख उन्होंने पूछा—"उसमें क्या था।" उसने गुस्से में कहा—"उसमें मछली का सिर, पूँछ तो है ही, एक विचित्र मगर भी है। "टाइगर" दोगे तो दिखाऊँगा।" इतने में टाइगर टोकरी के पास गया और उसमें से कुछ ले, मुख में रख भागने लगा। "अरे टाइगर, मेरी मछली लिये भागा जा रहा है।" चिल्लाता, शरारती लड़का भागा।

Printed by B. NAGI REDDI for the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

बसंती
LUX
Yellow
हरा
LUX
नीला
LUX
गुलाबी
LUX
'मेरा मनपसंद
लक्स
इंद्रधनुष के
चार रंगों में
और सफ़ेद भी!'
वहीदा रेहमान
कहती हैं
LTS 81-X29 HI
हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन